सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

"बुरा वक्त सिर्फ तकलीफ नहीं देता बल्कि वो उन चेहरों से भी नकाब हटा देता है, जिन्हें हम सालों से अपना समझते आए थे ...!!
अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–291 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, बुधवार 11 नवंबर 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

सोनिया गांधी की आत्मकथा 'Belonging' में सियासी और निजी जिंदगी के बड़े खुलासे

आलोक तिवारी / नईदिल्ली

कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी की आत्मकथा 'Belonging: A Journey of Love' इन दिनों राजनीतिक और साहित्यिक गलियारों में चर्चा के केंद्र में है। हार्पर कॉलिंस इंडिया द्वारा प्रकाशित 544 पन्नों की यह किताब नेहरू–गांधी परिवार से करीब 90 साल बाद आई आत्मकथा है। इसमें 2004 में प्रधानमंत्री पद ठुकराने से लेकर परिवार, पार्टी और विचारधारा तक के कई अनछुए पहलुओं पर विस्तार से लिखा गया है।

2004 में प्रधानमंत्री पद क्यों ठुकराया

किताब के मुताबिक लोकसभा चुनाव के नतीजों से पहले ही सोनिया गांधी ने अपने बच्चों राहुल और प्रियंका से कह दिया था कि वह प्रधानमंत्री नहीं बनेंगी, जिस पर दोनों खुश थे। लेकिन कांग्रेस की जीत के बाद 10 जनपथ पर हुई बैठक में पार्टी नेताओं के भारी दबाव और हंगामे के बीच घबराहट में उनके मुंह से धीरे से "ठीक है" निकल गया।

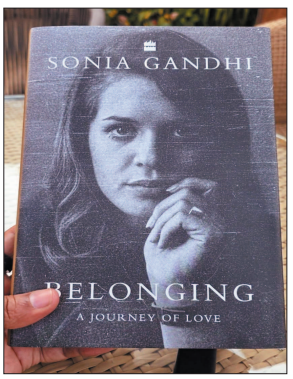
जब यह बात राहुल और प्रियंका को पता चली तो वे परेशान होकर उनके पास पहुंचे। राहुल ने कहा "हमारा क्या ?" जबकि प्रियंका ने उन्हें मजबूर न होने की सलाह दी। अंत में अंतरात्मा की आवाज पर सोनिया अपने पुराने फैसले पर कायम रहीं और संसद में डॉ. मनमोहन सिंह का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए प्रस्तावित किया।

'रिमोट कंट्रोल सरकार' के आरोप पर जवाब

यूपीए सरकार को रिमोट से चलाने के आरोपों पर सोनिया गांधी ने लिखा है कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ही थे। कांग्रेस अध्यक्ष होने के नाते वह सुझाव दे सकती थीं और असहमति जता सकती थीं, लेकिन अंतिम फैसला प्रधानमंत्री का ही होता था। सरकार और पार्टी में बेहतर तालमेल के लिए कोर ग्रुप की नियमित बैठकें होती थीं, जिसमें प्रणब मुखर्जी, अर्जुन सिंह, ए.के. एंटनी और अहमद पटेल शामिल होते थे।

प्रणब मुखर्जी की महत्वाकांक्षा का जिक्र

किताब में 2010 के एक वाकये का उल्लेख है, जब प्रणब मुखर्जी ने शीर्ष नेतृत्व में बदलाव का सुझाव दिया था। सोनिया के अनुसार यह उनकी प्रधानमंत्री बनने की पुरानी महत्वाकांक्षा की ओर इशारा था, जिसे उन्होंने सहजता से



टाल दिया। इस पर प्रणब मुखर्जी की बेटी शर्मिष्ठा मुखर्जी ने पलटवार करते हुए कहा कि महत्वाकांक्षी होना अपराध नहीं है और अपने पिता के लंबे अनुभव और योगदान का बचाव किया।

पीएम मोदी से वैचारिक मतभेद

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ संबंधों पर सोनिया गांधी ने लिखा है कि दोनों के बीच वैचारिक मतभेद हैं, लेकिन निजी नहीं। दोनों के बीच सीधा संवाद लगभग न के बराबर रहा। संसद सत्र के बाद स्पीकर के चैंबर में होने वाली औपचारिक बैठकों में ही आमना–सामना होता था। किताब में उल्लेख है कि गंभीर बीमारी के बाद लौटने पर पीएम मोदी ने कभी–कभार उनकी सेहत के बारे में पूछा।

निजी जिंदगी के संघर्ष

किताब में निजी जीवन के दुखद पहलू भी साझा किए गए हैं। राहुल गांधी के जन्म से एक साल पहले 1969 में समय से पहले जन्मे उनके बेटे की कुछ घंटों में ही मृत्यु हो गई थी। इस गहरे सदमे के बाद राजीव और संजय गांधी ने मेहरौली स्थित फार्म हाउस में एक गुलाबी बोगनवेलिया के पौधे के नीचे उसे दफनाया था। उस कठिन दौर में अमिताभ बच्चन की मां तेजी बच्चन ने सोनिया को एक पिल्ला गिफ्ट किया, जिससे उन्हें मानसिक संबल मिला।

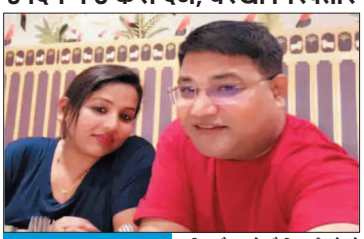
बाबरी विध्वंस पर प्रतिक्रिया

सोनिया गांधी ने लिखा है कि जब उन्होंने टीवी पर बाबरी मस्जिद को गिरते देखा तो फूट–फूटकर रो पड़ीं। उन्हें उसी समय लगा कि धर्मनिरपेक्ष भारत को बचाने के लिए एक लंबी वैचारिक लड़ाई लड़नी होगी। इस बयान के बाद भाजपा नेताओं ने इस पर प्रतिक्रिया दी है।

प्रकाशन और अन्य संस्मरण

किताब पहले पेंगुइन रैंडम हाउस से प्रकाशित होने वाली थी, लेकिन कुछ हिस्सों और राजनीतिक मुद्दों पर मतभेद के चलते बात नहीं बन पाई और अंततः हार्पर कॉलिंस ने इसे प्रकाशित किया। इसमें ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद इंदिरा गांधी की चेतावनी, राहुल–प्रियंका के अपहरण की आशंका, पहली बार तंदूरी चिकन खाने का अनुभव और बच्चन परिवार से पुराने गहरे रिश्तों का भी जिक्र है।

ठग दंपती पर पुलिस का शिकंजा कसा
5 दिन में 3 केस दर्ज, बरखा गिरफ्तार



रायपुर की चर्चित जोड़ी बरखा टंडन और अम्बेडकर टंडन उर्फ दीपक पर FIR – एटमास्फियरिया रेस्टोरेंट की जमीन बेचने के नाम पर लिए 36 लाख, जमीन निकली दूसरे की

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

खुद को बड़ा कारोबारी और शासन के करीबी बताकर करोड़ों की ठगी करने वाले अंबेडकर उर्फ दीपक टंडन और उसकी पत्नी बरखा टंडन की मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। पिछले 5 दिनों में दंपती के खिलाफ तीन मामले दर्ज हुए हैं और कई नए पीड़ित सामने आ रहे हैं। पुलिस ने बरखा टंडन को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि दीपक पहले से बिलासपुर पुलिस की हिरासत में है।

शराब कारोबारी से 56 लाख की ठगी

शराब कारोबारी आशीष जायसवाल की शिकायत पर तेलीबांधा थाना पुलिस ने दंपती के खिलाफ केस दर्ज किया है। आरोप है कि जमीन बेचने के नाम पर 36 लाख और फॉर्च्यूनर कार बेचने के नाम पर 20 लाख रुपये, कुल 56 लाख रुपये की ठगी की गई।

कोयला टेंडर के नाम पर 15 लाख ठगे

वहीं सक्ती जिले में कोयला कारोबारी किशन शर्मा ने शिकायत दर्ज कराई है। आरोप है कि दीपक टंडन ने कोयले का बड़ा टेंडर दिलाने का झांसा देकर 15 लाख रुपये लिए, लेकिन न टेंडर दिलाया और न ही पैसे लौटाए। सक्ती कोतवाली में केस दर्ज किया गया है।

कोल कारोबार के और पीड़ित आए सामने

पुलिस के अनुसार कोल कारोबार से जुड़े दो अन्य पीड़ित भी थाने पहुंचे हैं। उनकी शिकायतों की जांच की जा रही है। दंपती के खिलाफ लेन–देन और दस्तावेजों की जांच का दायरा बढ़ता जा रहा है।

पुलिस बरखा को कोर्ट में पेश कर रिमांड लेगी, वहीं दीपक को बिलासपुर से रायपुर लाने के लिए ट्रांजिट रिमांड की तैयारी की जा रही है। पुलिस का कहना है कि आने वाले दिनों में और शिकायतें सामने आ सकती हैं, हालांकि सभी आरोपों की पुष्टि जांच के बाद ही होगी।

महादेव सट्टा केस : सौरभ चंद्राकर आज दिल्ली से रायपुर लाया जाएगा
कल कोर्ट में पेशी, CBI रिमांड खत्म



नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

महादेव ऑनलाइन सट्टा ऐप केस के मुख्य आरोपी सौरभ चंद्राकर को 8 दिन की कस्टोडियल रिमांड खत्म होने के बाद गुरुवार 12 नवंबर को रायपुर की स्पेशल कोर्ट में पेश किया जाएगा। उइक की टीम उसे आज दिल्ली से रायपुर ला सकती है।

क्या ED लेगी कस्टडी ?

इस पेशी में सबसे अहम होगा कि उइक आगे की पूछताछ के लिए दोबारा रिमांड मांगती है या नहीं। अगर CBI रिमांड नहीं मांगती है, तो प्रवर्तन निदेशालय (ED) अपने वारंट को एक्जीक्यूट कराने के लिए कोर्ट में आवेदन पेश करेगी। पिछली पेशी में ED ने वारंट पर गिरफ्तारी की मांग की थी, लेकिन कोर्ट ने CBI की रिमांड जारी होने के कारण आवेदन को प्री–मैच्योर बताया था। अब एकदोबारा आवेदन करने की तैयारी में है।

8 दिन में सीबीआई ने क्या पूछा

CBI ने 8 दिन की रिमांड में सौरभ से महादेव ऐप के नेटवर्क, पैनल ऑपरेटरों, हवाला के जरिए लेनदेन और कथित प्रोटेक्शन मनी को लेकर पूछताछ की है। एजेंसी यह पता लगा रही है कि सट्टे से जुटाई गई रकम किन लोगों तक पहुंची और नेटवर्क में किन अधिकारियों की भूमिका थी।

116 दिन बाद ओमान से लाया गया भारत

सौरभ 2023 से दुबई में फरार था और इंटरपोल ने उसके खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया था। फर्जी दस्तावेजों के सहारे वह UAE से ओमान पहुंचा था। दैनिक भास्कर को मिले एक फर्जी इंडोनेशियाई पासपोर्ट में उसकी फोटो पर नाम 'अजंता मेंडिस' लिखा था।8 जुलाई 2026 को ओमान की रॉयल पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया और 1 नवंबर को CBI टीम मस्कट से उसे भारत लेकर आई।

जान का खतरा बताया था

ओमान में हिरासत के दौरान सौरभ ने भारत की जेल में जान को खतरा बताया था और परिवार की सुरक्षा की मांग की थी। उसने महादेव नेटवर्क के राजनीतिक कनेक्शन, पैसों के लेनदेन और विदेशी संपत्तियों की जानकारी देने की बात कही थी।

केस का बैकग्राउंड

महादेव ऐप मामले में पहली FIR 30 मार्च 2022 को दुर्ग के मोहन नगर थाने में दर्ज हुई थी। एजेंसी ने 6 अक्टूबर 2022 को मनी लॉन्ड्रिंग जांच शुरू की। CBI ने 18 दिसंबर 2024 को केस दर्ज किया और छत्तीसगढ़ सरकार ने इससे जुड़ी 13 FIR CBI को सौंपीं। इनमें से 2 में चार्जशीट दाखिल हो चुकी है। CBI के अनुसार यह देश के सबसे बड़े अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी नेटवर्क में से एक था, जिसे भारत के बाहर से चलाया जाता था। क्रिकेट, फुटबॉल, ताश पर सट्टा लगवाने के लिए देशभर में पैनल–ब्रांच बनाई गई थीं और रकम को हवाला से विदेश भेजा जाता था। नेटवर्क को चलाने के लिए सरकारी कर्मचारियों को रिश्वत देने का भी आरोप है।



16 साल बाद बदलेगा आंगनबाड़ियों का नाश्ता
दलिया की जगह इडली–सांभर–वड़ा मिलेगा



नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

प्रदेश की आंगनबाड़ियों में 2009 से चली आ रही रेडी टू ईट व्यवस्था में बड़ा बदलाव होने जा रहा है। 3 से 6 साल के बच्चों को सुबह 10.30 बजे मिलने वाले दलिये से अब बच्चों ने मुंह मोड़ लिया है। लगातार एक जैसा नाश्ता मिलने से खासकर 5–6 साल के बच्चे नाश्ता छोड़ रहे हैं। आंगनबाड़ी केंद्रों से लगातार मिल रही शिकायतों और विभागीय सर्वे के बाद महिला एवं बाल विकास विभाग ने मेन्यू बदलने का प्रस्ताव तैयार किया है।

दलिया नहीं खा रहे बच्चे

पिछले 16–17 साल से बच्चों को सप्ताह में तीन दिन मीठा और तीन दिन नमकीन दलिया दिया जा रहा है। दोनों की मूल सामग्री लगभग एक ही होती है। गेहूं, चना, सोयाबीन, शक्कर, गुड़ और रागी से बना यह दलिया अब बच्चों को पसंद नहीं आ रहा। कई केंद्रों में बच्चे आधा नाश्ता छोड़ देते हैं।

नए मेन्यू में क्या होगा

विभाग के नए प्रस्ताव में नाश्ते में इडली, सांभर–वड़ा, नारियल चटनी और उड़द दाल के बड़े जैसे व्यंजनों को शामिल किया गया है। इससे बच्चों को स्वाद के साथ पोषण भी मिलेगा और दक्षिण भारतीय व्यंजनों से प्रोटीन और कार्बोहाईड्रेट की पूर्ति होगी।

मिड डे मील भी बदलेगा

सुबह के नाश्ते के साथ दोपहर 12.30 बजे मिलने वाले गर्म भोजन में भी बदलाव प्रस्तावित है। अभी बच्चों को दाल–चावल के साथ आलू, हरी सब्जी या भाजी और सोयाबीन की बड़ी दी जाती है। नई व्यवस्था में दाल–चावल और सोयाबीन की बड़ी यथावत रहेगी, लेकिन सब्जियों के विकल्प बढ़ाए जाएंगे। आलू और भाजी के अलावा अन्य मौसमी सब्जियों को भी मेन्यू में जोड़ा जाएगा।

बच्चों को पौष्टिक भोजन देने के साथ अब उनकी रुचि और पसंद का भी ध्यान रखा जा रहा है। प्रयास है कि बच्चे नाश्ता रुचि से खाएं और उन्हें पोषण का अधिक लाभ मिले।
सी. सिसोदिया, डिप्टी डायरेक्टर, महिला एवं बाल विकास विभाग

बीजापुर में सराफा कारोबारी से 2 करोड़ के गहनों की लूट, लिफ्ट मांगकर बंदूक की नोक पर वारदात

नई दृष्टिबिंदु / बीजापुर

जिले में सराफा कारोबारियों को निशाना बनाकर लूट की बड़ी वारदात सामने आई है। भैरमगढ़ के माजिसा ज्वेलर्स के संचालक स्वरूप सोनी से बदमाशों ने बंदूक की नोक पर करीब 2 करोड़ रुपये के सोने–चांदी के आभूषण लूट लिए। घटना के बाद पुलिस ने नाकेबंदी कर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है।

लिफ्ट के बहाने टैक्सी में बैठे और लूट लिया

जानकारी के अनुसार गीदम निवासी सराफा कारोबारी स्वरूप सोनी सोमवार शाम करीब 5 बजे भैरमगढ़ में अपनी दुकान बंद कर टैक्सी बुक कर गीदम के लिए रवाना हुए थे। महानदी पुल पार करने के बाद रास्ते में दो युवकों ने टैक्सी को हाथ देकर रोका और लिफ्ट मांगी। टैक्सी चालक ने बुकिंग की गाड़ी बताकर मना किया, लेकिन स्वरूप सोनी ने मानवीयता दिखाते हुए उन्हें



जरूरतमंद समझकर बैठा लिया।

कुछ दूरी पर पहुंचते ही दोनों बदमाशों ने अचानक बंदूक निकाल ली। बंदूक की नोक पर कारोबारी और ड्राइवर को डरा–धमकाकर गाड़ी की चाबी छीन ली और कारोबारी के पास मौजूद आभूषणों से भरा बैग लेकर फरार हो गए। बैग में करीब 2 करोड़ रुपये के गहने थे।

पहले से थी रेकी का अंदेशा

पुलिस का मानना है कि बदमाशों को कारोबारी के आने–जाने के समय और उसके पास रोजाना गहनों से भरा बैग होने की पहले से जानकारी थी। सुनियोजित तरीके से की गई इस वारदात के बाद क्षेत्र के व्यापारियों में दहशत का माहौल है। भैरमगढ़ पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जगदलपुर में भी 2 करोड़ की चोरी

उल्लेखनीय है कि 7 नवंबर शनिवार को जगदलपुर शहर के पैलेस रोड स्थित एक ज्वेलरी शॉप से भी करीब दो करोड़ रुपये के आभूषणों की चोरी हुई थी। वहां महिलाओं के एक गिरोह ने बच्चियों के साथ मिलकर 1 किलो 200 ग्राम सोने के आभूषणों से भरा बॉक्स चुरा लिया था। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस ने उस मामले में महिलाओं को हिरासत में लिया है। लगातार दो बड़ी वारदातों से बस्तर संभाग के सराफा व्यापारियों में चिंता बढ़ गई है।

कोरबा में कारों से भरा कंटेनर 30 फीट नीचे गिरा, चालक गंभीर

कोरबा। कोरबा जिले में नेशनल हाईवे पर आंध्र प्रदेश से अंबिकापुर के एक ऑटो सेंटर के लिए आठ नई कारें लेकर जा रहा भारी कंटेनर मोरगा चौकी क्षेत्र के बड़े मदनपुर घाट में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। घाट के पास वाहन अनियंत्रित होकर सड़क से लगभग 30 फीट नीचे जा गिरा। हादसे में कंटेनर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया, जबकि उसमें लोड सभी आठ नई कारों को भी भारी नुकसान पहुंचा है। दुर्घटना में कंटेनर चालक घायल हुआ है, जिसे प्राथमिक उपचार के लिए स्वास्थ्य केंद्र भेजा गया। हादसे में लाखों रुपये की संपत्ति के नुकसान की आशंका जताई जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, भारी कंटेनर वाहन आंध्र प्रदेश से आठ नई कारें लोड कर अंबिकापुर स्थित महामाया ऑटो सेंटर के लिए रवाना हुआ था। कंटेनर कोरबा जिले के रास्ते अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहा था। इसी दौरान मोरगा चौकी अंतर्गत बड़े मदनपुर घाट के पास वाहन का संतुलन बिगड़ गया। बताया जा रहा है कि कंटेनर तेज रफ्तार में था और घाट की ढलान तथा मोड़ पर चालक वाहन को नियंत्रित नहीं कर सका।



डीआरएम ने किया पावर हाउस स्टेशन का निरीक्षण, काम में लेट लतीफी पर जताई नाराजगी

निरीक्षण दौरे के दौरान डीआरएम के साथ रेलवे डिवीजन स्तर के कई वरिष्ठ अधिकारी और तकनीकी विशेषज्ञ भी थे मौजूद

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत भिलाई पावर हाउस रेलवे स्टेशन पर चल रहा कायाकल्प और उन्नयन कार्य अब अपने अंतिम पड़ाव पर पहुंच गया है। आगामी नए साल के फरवरी महीने में इस नवनिर्मित और आधुनिक सुविधाओं से लैस स्टेशन का उद्घाटन कर इसे आम जनता को समर्पित कर दिया जाएगा। इस दिशा में चल रही तैयारियों और निर्माण कार्य की प्रगति का जायजा लेने के लिए बुधवार को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक दयानंद ने स्टेशन का विस्तृत निरीक्षण किया।

निरीक्षण दौरे के दौरान डीआरएम के साथ रेलवे डिवीजन स्तर के कई वरिष्ठ अधिकारी और तकनीकी विशेषज्ञ भी मौजूद थे। डीआरएम दयानंद ने पूरे स्टेशन परिसर, प्लेटफॉर्मों तथा निर्माणाधीन यात्री सुविधाओं का बारीकी से अवलोकन किया। कार्यों में देरी और कुछ स्थानों पर दिखी गुणवत्ता संबंधी कमियों पर उन्होंने कड़ी नाराजगी व्यक्त की और संबंधित ठेका एजेंसी को निर्देश दिया कि शेष सभी बचे हुए कार्यों को हर हाल में जनवरी 2027 के भीतर पूरा कर लिया जाए। निरीक्षण के दौरान प्लेटफॉर्म नंबर एक पर स्थित नवनिर्मित वातानुकूलित प्रतीक्षालय का नया दरवाजा सीलन के कारण खराब



पाया गया।

इस लापरवाही पर डीआरएम ने निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधियों को जमकर फटकार लगाई और तुरंत गुणवत्तापूर्ण सुधार के सख्त निर्देश दिए। इसके अलावा, उन्होंने सभी प्लेटफॉर्मों पर पेयजल आपूर्ति व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए आवश्यक सुझाव दिए तथा एस्केलेटर के शेष बचे काम को बिना किसी देरी के शीघ्र पूरा करने की हिदायत दी। पत्रकारों से चर्चा करते हुए डीआरएम दयानंद ने स्पष्ट किया कि उनके इस निरीक्षण दौरे का मुख्य उद्देश्य चल रहे विकास कार्यों की गति में तेजी लाना है।

उन्होंने स्वीकार किया कि केवल भिलाई पावर हाउस ही नहीं, बल्कि अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत जहां-जहां नवनिर्माण कार्य चल रहे हैं, वहाँ निर्माण एजेंसियों की ओर से कुछ लेट-लतीफी देखने को मिल रही है। उन्होंने आगे कहा कि परियोजना के इस अंतिम चरण में कार्यदायी एजेंसी को बदलना व्यावहारिक और संभव नहीं है, इसलिए मौजूदा एजेंसियों को ही श्रमबल बढ़ाकर काम में तेजी लाने का कड़ा निर्देश दिया गया है।

रेलवे प्रशासन की पूरी कोशिश है कि समयसीमा का पालन करते हुए फरवरी महीने तक भिलाई पावर हाउस स्टेशन का नवनिर्माण कार्य पूर्ण कर इसका औपचारिक उद्घाटन कर दिया जाए, ताकि यात्रियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं मिल सकें।

खास खबर

जिला परामर्शदात्री समिति के निर्णयों का एक वर्ष बाद भी पालन नहीं, कर्मचारियों में बढ़ता आक्रोश



नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ प्रदेश तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी संघ, जिला शाखा दुर्ग ने शासकीय कर्मचारियों की लंबित सेवा संबंधी समस्याओं एवं जिला परामर्शदात्री समिति की बैठक में लिए गए निर्णयों का विभागीय स्तर पर पालन नहीं किए जाने को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी, जिला दुर्ग को विस्तृत ज्ञापन सौंपकर तत्काल निराकरण की मांग की है।

संघ के जिलाध्यक्ष भानु प्रताप यादव ने बताया कि जिला परामर्शदात्री समिति की बैठक दिनांक 19 दिसंबर 2025 को आयोजित की गई थी, जिसमें कर्मचारियों की विभिन्न समस्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा कर संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए थे। इसके बावजूद लगभग एक वर्ष बीत जाने के बाद भी अनेक विभागों में इन निर्देशों का प्रभावी पालन नहीं किया गया है। इससे कर्मचारियों को आर्थिक एवं मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है तथा उन्हें अपने ही सेवा संबंधी अधिकारों के लिए कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ शासन के सामान्य प्रशासन विभाग (शासकीय कर्मचारी कल्याण शाखा) के पत्र 10 सितंबर 2024 में कर्मचारी संगठनों के साथ नियमित संवाद एवं समस्याओं के निराकरण की व्यवस्था को प्रभावी बनाने की मंशा स्पष्ट की गई है। शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक तीन माह में जिला परामर्शदात्री समिति की बैठक आयोजित कर उसमें मान्यता प्राप्त कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधियों को समुचित प्रतिनिधित्व दिया जाना अपेक्षित है। इसके बावजूद जिला दुर्ग में नियमित बैठक आयोजित नहीं होने से कर्मचारियों की समस्याएं लंबित हैं।

संघ ने ज्ञापन में प्रमुख रूप से निम्नलिखित मांगें उठाई हैं-

जिला परामर्शदात्री समिति की नियमित बैठकः शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक तीन माह में बैठक आयोजित की जाए तथा मान्यता प्राप्त कर्मचारी संगठनों को बैठक की तिथि एवं एजेंडा की सूचना समयपूर्व दी जाए। पूर्व बैठकों के निर्णयों की विभागवार समीक्षा भी सुनिश्चित की जाए।

समयबद्ध पदोन्नति एवं DPC: जिले के सभी विभागों में रिक्त पदों की समीक्षा कर पात्र कर्मचारियों की अद्यतन वरिष्ठता सूची तैयार की जाए तथा लंबित विभागीय पदोन्नति समिति (DPC) की बैठक आयोजित कर पदोन्नति प्रकरणों का नियमानुसार निराकरण किया जाए। सेवानिवृत्ति के निकट कर्मचारियों के प्रकरणों को प्राथमिकता दी जाए।

समयमान एवं क्रमोन्नत वेतनमानः निर्धारित सेवाकाल पूर्ण कर चुके पात्र कर्मचारियों के समयमान, क्रमोन्नत एवं उच्चतर वेतनमान के लंबित प्रकरणों का परीक्षण कर स्वीकृति प्रदान की जाए। कर्मचारियों को एरियर सहित समस्त देय वित्तीय लाभ दिलाए जाएं।

पेंशन एवं सेवानिवृत्ति स्वतः आगामी 12 माह में सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के पेंशन प्रकरण समयपूर्व तैयार कराए जाएं। सेवानिवृत्ति तिथि के पूर्व PPO जारी कराया जाए तथा सेवानिवृत्ति के दिन ही कर्मचारियों को PPO, पेंशन स्वीकृति संबंधी दस्तावेज एवं अन्य आवश्यक अभिलेख उपलब्ध कराए जाएं। ग्रेच्युटी, अर्जित अवकाश नगदीकरण, समूह बीमा एवं अन्य देय स्वत्वों का भुगतान निर्धारित समय-सीमा में सुनिश्चित किया जाए।

सेवापुस्तिका का नियमित संधारणः सभी विभागों में कर्मचारियों की सेवापुस्तिकाओं का वार्षिक सत्यापन, वेतन निर्धारण, सेवा सत्यापन एवं आवश्यक प्रविष्टियां समय पर पूर्ण कराई जाएं, ताकि सेवानिवृत्ति के समय पेंशन एवं अन्य भुगतान में परेशानी न हो।

अन्य विभागीय समस्याएं: वेतन विसंगति, लंबित वेतनवृद्धि, एरियर भुगतान, अवकाश स्वीकृति, स्थानांतरण, सेवा अभिलेखों में सुधार एवं अन्य स्थापना संबंधी समस्याओं का विभागीय स्तर पर समयबद्ध निराकरण किया जाए।

विभागीय अधिकारियों की जवाबदेहीः जिले के समस्त विभाग प्रमुखों से लंबित कर्मचारी प्रकरणों की अद्यतन जानकारी प्राप्त कर निराकरण की स्थिति एवं विलंब के कारणों सहित प्रतिवेदन लिया जाए। इसके लिए जिला स्तर पर नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाए तथा लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों की जवाबदेही निर्धारित की जाए।

संघ ने कलेक्टर से मांग की है कि सभी संबंधित विभागीय अधिकारियों को 15 दिवस के भीतर प्रारंभिक अनुपालन प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिए जाएं। जिन प्रकरणों का निराकरण इस अवधि में संभव नहीं है, उनके संबंध में स्पष्ट कारण एवं निराकरण की निश्चित समय-सीमा निर्धारित की जाए।

प्रधान जिला और सत्र न्यायालय, दुर्ग में पुलिस सहायता केन्द्र हुआ प्रारंभ

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग



न्यायालयीन परिसर की सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने, विधि-व्यवस्था बनाए रखने तथा न्यायिक कार्यों के सुचारू एवं निर्बाध संचालन को सुनिश्चित करने की दिशा में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायालय, दुर्ग परिसर में पुलिस सहायता केन्द्र प्रारंभ किया गया है। 6 नवंबर को प्रथम जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश शेख अशरफ प्रथम, कलेक्टर अभिजीत सिंह तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल की उपस्थिति में फीता काटकर पुलिस सहायता केन्द्र का विधिवत शुभारंभ किया गया। इस केन्द्र के माध्यम से नागरिकों को एफआईआर की प्रति प्राप्त करने, सम्मान एवं वारंट संबंधी जानकारी, पुलिस सत्यापन तथा ई-फाइलिंग की प्रक्रिया के संबंध में मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाएगा। साथ ही, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से पात्र जरूरतमंद व्यक्तियों को निःशुल्क विधिक सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया की जानकारी भी दी जाएगी।

उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एवं जिला न्यायालय दुर्ग के पोर्टफोलियो जज न्यायमूर्ति नरेश कुमार चंद्रवंशी द्वारा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायालय, दुर्ग के वार्षिक निरीक्षण के दौरान न्यायालयीन परिसर की सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर ध्यान आकृष्ट किया गया था। इस संबंध में न्यायालय परिसर में पुलिस सहायता केन्द्र प्रारंभ करने हेतु न्यायमूर्ति महोदय की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात जिला पुलिस प्रशासन, दुर्ग के सहयोग एवं समन्वय से यह केन्द्र प्रारंभ किया गया है।

उद्घाटन कार्यक्रम में तृतीय जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश यशवंत कुमार सारथी, चतुर्थ जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश सुनीता टोप्पो, अष्टम जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश पुरुषोत्तम सिंह मरकाम, नवम जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश पंकज दीक्षित, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव उमेश कुमार भागवतकर, तृतीय अतिरिक्त न्यायाधीश प्रथम व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ श्रेणी वीरेन्द्र सिंह, चतुर्दश व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ श्रेणी पंकज शर्मा एवं पंचदश व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ श्रेणी आयुष ताम्रकार उपस्थित रहे।

इसी प्रकार जिला अधिवक्ता संघ, दुर्ग के अध्यक्ष रमेश कुमार शर्मा, सचिव रविशंकर सिंह, कोषाध्यक्ष साकेत मिश्रा एवं सदस्य रविशंकर मानिकपुरी सहित पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारी-कर्मचारी तथा अधिवक्तागण भी कार्यक्रम में शामिल हुए। दुर्ग पुलिस ने आम नागरिकों से अपील की है कि न्यायालय परिसर में किसी भी प्रकार की पुलिस संबंधी सहायता, आवश्यक जानकारी अथवा मार्गदर्शन की आवश्यकता होने पर पुलिस सहायता केन्द्र का लाभ लें। न्यायालय परिसर में न्यायाधीशगण, अधिवक्तागण, न्यायालयीन कर्मचारीगण एवं विभिन्न प्रकरणों के पक्षकार प्रतिदिन न्यायिक कार्यों के लिए उपस्थित होते हैं। ऐसे में प्रभावी सुरक्षा एवं सुव्यवस्थित कानून-व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है। पुलिस सहायता केन्द्र के प्रारंभ होने से सुरक्षा संबंधी समस्याओं पर त्वरित कार्रवाई, अप्रिय घटनाओं की रोकथाम एवं प्रभावी नियंत्रण में सहायता मिलेगी। साथ ही न्यायालय में आने वाले सभी व्यक्तियों को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने तथा न्यायिक कार्यवाही के दौरान किसी भी प्रकार की बाधा की आशंका को न्यूनतम करने में मदद मिलेगी।

इस व्यवस्था से न्यायालय में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने तथा न्यायिक कार्यों के निष्पादन हेतु शांतिपूर्ण, अनुशासित एवं अनुकूल परिस्थितियां सुनिश्चित करने में सहयोग प्राप्त होगा। न्यायालयीन परिसर में सुरक्षा, शांति एवं सुव्यवस्था का सुदृढ़ीकरण न्यायिक गरिमा की रक्षा तथा न्यायिक कार्यों के निर्बाध संचालन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

काली मंदिर में वरिष्ठ कांग्रेस नेता अरूण वोरा ने की पूजा-अर्चना



नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं पूर्व विधायक अरुण वोरा ने गोवर्धन पूजा के अवसर पर बरईपारा स्थित काली मंदिर में पूजा अर्चना कर शहरवासियों के सुख समृद्धि की कामना की। इस दौरान राष्ट्रीय पर्व उत्सव समिति द्वारा दशहरा महोत्सव आयोजन के लिए सम्मान स्वरुप एलबम भेट किया गया।

समिति के आजीवन अध्यक्ष डॉ. जगदीशचंद्र मिश्रा, आजीवन सरंक्षक मोतीलाल वोरा ने बरईपारा स्थित काली मंदिर प्रांगण को धार्मिक धाम के रुप में विकसित करने की कल्पना की थी इसी के तहत निर्माण कार्य कराए जा रहे है। निर्माण कार्यों की जानकारी काली मंदिर समिति के सचिव नंदू महोबिया ने दी मंदिर प्रांगण में चल रहे है। भगवान ब्राम्हा, विष्णु, महेश, सप्तऋषि, कालभैरव, गौमाता, संतोषी माता, बम्लेश्वरी माता, हनुमान जी, सत्य सांई बाबा, विश्वकर्मा भगवान, रामदरबार, सरस्वती माता प्रतिमा के छत गुम्मद निर्माण हो चुका है। इस दौरान समिति सचिव नंदू महोबिया, सुनील महोबिया, हरीश ताम्रकार, सुमन महोबिया, राजकुमार वर्मा, सूरज महोबिया, ऋषि साहू, मुकेश महोबिया, संतोष निर्मलकर, सुधीर चंदेल, लक्ष्मीनाथ कसार सहित मोहल्लेवासी बड़ी संख्या में मौजूद थे।



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में लिबरल आर्ट्स विभाग में चौथी स्नातकोत्तर शोध संगोष्ठी का आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भिलाई के लिबरल आर्ट्स विभाग द्वारा दिनांक 2 एवं 3 नवंबर 2026 को चौथी स्नातकोत्तर शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस वर्ष संगोष्ठी का विषय दैनिक जीवन और उसमें आने वाले व्यवधानः सामान्य जीवन की दिनचर्या एवं बदलाव था।

इस अवसर पर ईसर पुणे की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. शालिनी शर्मा ने मुख्य व्याख्यान दिया। उनके व्याख्यान का विषय दैनिक जीवनरू एक नई सोच, दृष्टिकोण और रचनात्मकता के अवसर के रूप में व्यवधान था। डॉ. शर्मा ने अपने व्याख्यान में बताया कि दैनिक जीवन की सामान्य दिनचर्या में आने वाले बदलाव और व्यवधान किस प्रकार नई सोच, रचनात्मकता एवं शोध के नए अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ऐसे अनुभवों से हम अपने आसपास की चुनौतियों और कठिन परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। इस वर्ष आयोजित स्नातकोत्तर शोध संगोष्ठी में देशभर के शोधार्थियों एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इन शोध पत्रों में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों पर बहुविषयक दृष्टिकोण से चर्चा की गई।

प्रस्तुत शोध में दैनिक जीवन की सामान्य दिनचर्या में आने वाले विभिन्न बदलावों एवं व्यवधानों का अध्ययन किया गया तथा यह समझने का प्रयास किया गया कि किस प्रकार ये विषय बौद्धिक चिंतन और शोध के नए अवसर प्रदान करते हैं। शोध पत्रों में समकालीन जीवन के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं, जैसे श्रम, देखभाल, प्रवासन तथा ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही स्मृतियों पर विशेष रूप से विचार-विमर्श किया गया। इस शोध संगोष्ठी के अंतर्गत साउथ एशिया रिसर्च के सहयोग से एक शैक्षणिक लेखन कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का संचालन मोंक प्रयोगशाला के रिसर्च ऑथर (शोध लेखक) डॉ. अनिरुद्ध टागट ने किया। उल्लेखनीय है कि उदार कला विभाग द्वारा प्रतिवर्ष स्नातकोत्तर शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इसका उद्देश्य मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के शोधार्थियों को अपना शोध कार्य प्रस्तुत करने तथा समसामयिक एवं सामाजिक महत्व के विषयों पर अकादमिक चर्चा और विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान करना है। इस संगोष्ठी में विशेष रूप से दक्षिण एशियाई संदर्भों से जुड़े विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

पुलिस परिवार की बेटी गायिका पूर्वा ने बीबीए में हासिल किया स्वर्ण पदक, राज्यपाल डेका ने किया सम्मानित

गायन के क्षेत्र में भी 50 से अधिक प्रथम पुरस्कार हासिल कर चुकी हैं पूर्वा, बॉलीवुड कलाकारों से भी मिल चुकी है प्रशंसा

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग



प्रतिभा, मेहनत और लगन के दम पर दुर्ग की होनहार बेटी एवं गायिका पूर्वा श्रीवास्तव ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल कर अपने परिवार और शहर का नाम रोशन किया है। पंडित सुंदरलाल शर्मा विश्वविद्यालय, बिलासपुर से बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (बीबीए) की पढ़ाई करने वाली पूर्वा ने वर्ष 2021-2024 बैच में विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक हासिल किया है। उनकी इस उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धि के लिए छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका के हाथों उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

पूर्वा की यह सफलता उनकी निरंतर मेहनत, अनुशासन, लगन और समर्पण का परिणाम है। खास बात यह है कि पूर्वा ने पढ़ाई के साथ-साथ संगीत और गायन के क्षेत्र में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। गायन के क्षेत्र में अब तक उन्हें 50 से अधिक प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। उनकी प्रतिभा को राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना मिली है। पूर्वा को बॉलीवुड के प्रसिद्ध संगीतकार आनंद-मिलिंद और वरिष्ठ गायिका पूर्णिमा के साथ मंच साझा करने का अवसर मिल चुका है। वहीं बॉलीवुड अभिनेता आदित्य पंचोली भी उनके गायन की भूरी-भूरी प्रशंसा कर चुके हैं। छत्तीसगढ़ शासन के शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव ने भी पूर्वा के जन्मदिन के अवसर पर उनकी प्रतिभा का सम्मान किया था।

पूर्वा श्रीवास्तव पुलिस परिवार से संबंध रखती हैं। उनके पिता डॉ. यशवंत श्रीवास्तव दुर्ग स्थित रेंज साइबर थाना में सहायक उपनिरीक्षक के पद पर पदस्थ हैं। पूर्वा की उपलब्धियों को लेकर पुलिस विभाग के अधिकारियों ने हमेशा उनका उत्साहवर्धन किया है। विशेष रूप से आईजी अभिषेक शांडिल्य ने दुर्ग जिले में पदस्थापना के दौरान पूर्वा को निरंतर प्रोत्साहित किया और उनकी प्रतिभा को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

पूर्वा की इस उपलब्धि पर पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों, पुलिसकर्मियों, छत्तीसगढ़ मंच, अधिवक्ताओं, समाजसेवियों, शुभचिंतकों तथा दुर्ग शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र के पूर्व और वर्तमान विधायकों ने बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

बधाई देने वालों में एडीजी विवेकानंद सिन्हा, आईजी रामगोपाल गर्ग, आईजी अमरेश मिश्रा, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रशांत अग्रवाल, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मुंगेली भोजराम पटेल, पुलिस अधीक्षक बेमेतरा त्रिलोक बंसल, पुलिस अधीक्षक कांकेर शलभ सिन्हा, पुलिस अधीक्षक धमतरी प्रशांत ठाकुर, पुलिस अधीक्षक अकादमी चंदखुरी अभिषेक पल्लव, पुलिस अधीक्षक महासमुंद प्रभात कुमार, पुलिस अधीक्षक सरगुजा राजेश कुमार अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक दंतेवाड़ा चंद्रमोहन सहित अनेक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी शामिल हैं।

इसके अलावा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शोभराज अग्रवाल, मनीषंकर चंद्रा, अभिषेक झा, कीर्तिन राठौर, आशीष बघेल, संजय ध्रुव, डीएसपी श्रीमती शिल्पा साहू, चंद्रप्रकाश तिवारी, देवांश राठौर, सीएसपी हरीश पाटिल सहित पुलिस विभाग के अनेक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी पूर्वा को शुभकामनाएं दीं।

रेंज साइबर थाना दुर्ग के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनूप लकड़ा, विभिन्न थाना एवं शाखाओं के अधिकारियों-कर्मचारियों, रेंज साइबर थाना स्टाफ तथा भारती विश्वविद्यालय के एमडी सुशील चंद्राकर, जय चंद्राकर एवं कुलसचिव डॉ. वीरेंद्र स्वर्णकार ने भी पूर्वा की इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

पूर्वा की सफलता इस बात का प्रेरक उदाहरण है कि दृढ़ इच्छाशक्ति, निरंतर अभ्यास और समर्पण के साथ शिक्षा एवं कला के क्षेत्र में एक साथ उत्कृष्ट मुकाम हासिल किया जा सकता है। उनकी उपलब्धि न केवल पुलिस परिवार, बल्कि दुर्ग शहर और पूरे छत्तीसगढ़ के लिए गर्व का विषय है।

गोवर्धन पूजा प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, गौसेवा और पर्यावरण संरक्षण का पावन पर्व : सीएम साय

हमारी संस्कृति में गौमाता का विशेष स्थान, कृषि और ग्रामीण जीवन की समृद्धि से जुड़ी है गौसेवा की परंपरा : मुख्यमंत्री

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-जशपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने गोवर्धन पूजा के पावन अवसर पर जशपुर जिले के बगिया स्थित निवास में धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या साय के साथ विधि-विधान से गौमाता की पूजा-अर्चना की। मुख्यमंत्री श्री साय ने गौमाता को तिलक लगाकर उनका पूजन किया और आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण एवं गौमाता से प्रदेशवासियों के सुखी, समृद्ध और खुशहाल जीवन की प्रार्थना की तथा प्रदेश के खेत-खलिहान सदैव धन-धान्य से परिपूर्ण रहने की मंगलकामना की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर प्रदेशवासियों को गोवर्धन पूजा की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह पर्व हमारी सनातन संस्कृति में प्रकृति, गौवंश और कृषि जीवन के प्रति श्रद्धा एवं कृतज्ञता



का प्रतीक है। भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन लीला के माध्यम से प्रकृति के संरक्षण, जीव-जंतुओं के प्रति करुणा और सामूहिक कल्याण का जो संदेश दिया था, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गौमाता को पूजनीय स्थान प्राप्त है। गौवंश हमारी कृषि परंपरा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग रहा है। गौसेवा केवल हमारी धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि प्रकृति और समस्त जीव-जगत के प्रति संवेदनशीलता तथा संरक्षण की हमारी सांस्कृतिक चेतना की भी अभिव्यक्ति है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोवर्धन पूजा का पर्व हमें स्मरण कराता है कि मानव जीवन की समृद्धि प्रकृति के साथ संतुलन और सहअस्तित्व में निहित है। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों और गौवंश की रक्षा करने की पौराणिक कथा हमें संकट के समय एकजुटता, परस्पर सहयोग और लोककल्याण की प्रेरणा देती है। मुख्यमंत्री श्री साय ने भगवान श्रीकृष्ण एवं गौमाता से प्रार्थना की कि उनकी कृपा से छत्तीसगढ़ का हर परिवार सुखी और समृद्ध रहे, किसानों के खेतों में भरपूर फसल हो तथा प्रदेश निरंतर प्रगति और खुशहाली के पथ पर आगे बढ़ता रहे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति में भी गौवंश, खेती-किसानी और प्रकृति के प्रति गहरी आस्था रही है। गोवर्धन पूजा के साथ मनाया जाने वाला गौरा-गौरी पर्व हमारी समृद्ध लोकपरंपराओं और सामाजिक एकता का जीवंत उदाहरण है। ऐसे पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाने के साथ समाज को अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं।

खास खबर

राज्यपाल रमेन डेका ने गोवर्धन पूजा पर श्री बांके बिहारी मंदिर में पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि की कामना



नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राज्यपाल रमेन डेका ने गोवर्धन पूजा के पावन अवसर पर राजधानी रायपुर के सदर बाजार स्थित प्रसिद्ध श्री बांके बिहारी मंदिर पहुंचकर भगवान श्री बांके बिहारी जी के दर्शन किए और विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर राज्य की प्रथम महिला श्रीमती रानी डेका काकोटी भी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। पूजा-अर्चना के दौरान राज्यपाल श्री डेका ने भगवान श्री बांके बिहारी जी से पूरे प्रदेश की जनता की सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली के लिए प्रार्थना की। इस पावन पर्व पर राज्यपाल ने समस्त प्रदेशवासियों को गोवर्धन पूजा की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि यह पर्व सभी के जीवन में नई ऊर्जा, उमंग, सुख, शांति और समृद्धि लेकर आएं।

बच्चों की मुस्कान के बीच मना मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े का जन्मदिन, आंगनबाड़ी में साझा किया न्योता भोज

रायपुर। जन्मदिन की खुशियां अपनों के बीच मनाई जाती हैं, लेकिन जब इन खुशियों में बच्चों की मुस्कान जुड़ जाए तो वह दिन और भी खास बन जाता है। महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने अपना जन्मदिन सूरजपुर जिला के ग्राम लटोरी के नवापारा स्थित आंगनबाड़ी केंद्र के नन्हे-मुन्ने बच्चों के साथ मनाया। न्योता भोज के इस आत्मीय आयोजन में उन्होंने बच्चों को अपने हाथों से भोजन परोसा और उनके साथ पंगत में बैठकर भोजन किया। इस अवसर पर प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मरावी भी मौजूद रहे।



मंत्री श्रीमती राजवाड़े के आंगनबाड़ी केंद्र पहुंचते ही बच्चों ने एक स्वर में हैप्पी बर्थडे टू यू गाकर उन्हें जन्मदिन की बधाई दी। बच्चों के इस स्नेहपूर्ण स्वागत से आयोजन में अपनत्व और उल्लास घुल गया। मंत्री ने बच्चों के बीच बैठकर उनसे बातचीत की, उनके नाम पूछे और उन्हें अपनी बातें साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। बच्चों ने पूरे उत्साह से अपना परिचय दिया।

बातचीत के दौरान बच्चों ने मछली जल की रानी है, आलू कचालू और तितली रानी जैसी बाल कविताएं सुनाईं। नन्हे बच्चों की प्यारी प्रस्तुतियों पर मंत्री ने तालियां बजाकर उनका उत्साह बढ़ाया। जब उन्होंने पूछा कि आंगनबाड़ी में रोज कौन-कौन आता है, तो बच्चों ने मुस्कुराते हुए हाथ उठाकर जवाब दिया। उनकी सहजता और आत्मविश्वास ने वहां मौजूद सभी लोगों का मन मोह लिया। बच्चों के साथ संवाद में मंत्री ने स्वच्छता की अच्छी आदतों पर भी बात की। उन्होंने पूछा कि चॉकलेट खाने के बाद उसका रैपर कहां डालना चाहिए। बच्चों ने एक साथ कहा डस्टबिन में। मंत्री ने उनकी सराहना की और आसपास साफ-सफाई रखने की सीख दी।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने किया निमार्णाधीन स्वास्थ्य परियोजनाओं का निरीक्षण, गुणवत्ता और समय-सीमा पर दिया जोर

आमाखेरवा में 220 बिस्तरीय सिविल अस्पताल, झगराखंड रोड पर अस्थायी मेडिकल कॉलेज व छात्रावास और परसगढ़ी मेडिकल कॉलेज के निर्माण कार्यों का लिया जायजा

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-मनेन्द्रगढ़

प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री एवं मनेंद्रगढ़ विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्याम बिहारी जायसवाल ने मनेंद्रगढ़ क्षेत्र में संचालित विभिन्न स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक निर्माण परियोजनाओं का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने आमाखेरवा में निमार्णाधीन 220 बिस्तरीय सिविल अस्पताल, झगराखंड रोड पर निमार्णाधीन अस्थायी मेडिकल कॉलेज एवं बालक-बालिका छात्रावास तथा परसगढ़ी में बन रहे मेडिकल कॉलेज के निर्माण कार्यों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान मंत्री ने अधिकारियों, इंजीनियरों एवं निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधियों से निर्माण कार्यों की प्रगति, गुणवत्ता और परियोजनाओं के पूर्ण होने की निर्धारित समय-सीमा के संबंध में विस्तार से जानकारी ली।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने सबसे पहले आमाखेरवा में निमार्णाधीन 220 बिस्तरीय सिविल अस्पताल का निरीक्षण किया। उन्होंने अस्पताल भवन के निर्माण कार्यों की प्रगति की जानकारी लेते हुए संबंधित अधिकारियों से अब तक पूर्ण हुए कार्यों और शेष निर्माण कार्यों की स्थिति के बारे में चर्चा की। मंत्री ने कहा कि यह अस्पताल मनेंद्रगढ़ एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण परियोजना है। अस्पताल का निर्माण पूर्ण होने के बाद क्षेत्रवासियों को



आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का लाभ स्थानीय स्तर पर मिल सकेगा।

अस्थायी मेडिकल कॉलेज और छात्रावास निर्माण की भी समीक्षा

इसके बाद मंत्री ने मनेंद्रगढ़ के झगराखंड रोड पर निमार्णाधीन अस्थायी मेडिकल कॉलेज एवं बालक-बालिका छात्रावास के कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने निर्माण कार्यों की वर्तमान स्थिति की जानकारी लेते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मंत्री ने कहा कि मेडिकल कॉलेज की स्थापना से क्षेत्र में चिकित्सा शिक्षा के नए अवसर उपलब्ध होंगे। वहीं, बालक एवं बालिका छात्रावासों के निर्माण से मेडिकल कॉलेज में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को बेहतर आवासीय सुविधाएं मिल सकेंगी।

परसगढ़ी मेडिकल कॉलेज निर्माण कार्यों का किया निरीक्षण

मंत्री जायसवाल ने परसगढ़ी में निमार्णाधीन मेडिकल कॉलेज परिसर पहुंचकर वहां चल रहे निर्माण कार्यों का भी निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधियों एवं संबंधित अधिकारियों से कार्य की प्रगति, निर्माण सामग्री की गुणवत्ता तथा निर्धारित समय-सीमा के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि मेडिकल कॉलेज का निर्माण एमसीबी जिले के विकास और स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपलब्धि साबित होगा। इससे क्षेत्र के विद्यार्थियों को चिकित्सा शिक्षा के बेहतर अवसर मिलेंगे और आम नागरिकों को उन्नत स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी।

गुणवत्ता से समझौता नहीं, समय-सीमा में पूरे हों कार्य

निरीक्षण के दौरान स्वास्थ्य मंत्री ने सभी निर्माण परियोजनाओं में गुणवत्ता के निर्धारित मानकों का अनिवार्य रूप से पालन करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों एवं इंजीनियरों से कहा कि निर्माण कार्यों की नियमित निगरानी की जाए और कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। परियोजनाओं को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण करने के लिए आवश्यक संसाधन एवं बेहतर समन्वय सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि इन परियोजनाओं का उद्देश्य क्षेत्र के नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर पैदा करना है, इसलिए निर्माण कार्यों में गुणवत्ता और समयबद्धता सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

मंत्री ने कहा कि सरकार क्षेत्र में स्वास्थ्य अधोसंरचना को मजबूत बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। इन परियोजनाओं के पूर्ण होने से मनेंद्रगढ़ सहित आसपास के क्षेत्रों के लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं मिलेंगी और विद्यार्थियों को चिकित्सा शिक्षा के लिए बेहतर वातावरण उपलब्ध होगा।

उद्योग मंत्री देवांगन ने विकास कार्यों का किया भूमिपूजन और लोकार्पण

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-कोरबा

उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन के मुख्य आतिथ्य में कोरबा में सर्वमंगला नगर जोन के डगनियाखार में भूमिपूजन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान वार्ड क्रमांक 64, 65 और 66 में पेयजल पाइपलाइन एवं नाली निर्माण के कार्यों का भूमिपूजन किया गया। साथ ही वार्ड क्रमांक 64 स्थित प्राथमिक शाला इमलीछापर के नवीन भवन का लोकार्पण किया गया।

भूमिपूजन किए गए कार्यों में वार्ड क्रमांक 66 के बलगी हायर सेकेंडरी स्कूल से डीआई पाइपलाइन बिछाने के लिए 4.21 लाख रुपये, डगनिया में सूरजभान के घर के पास से पीपल चौरा तक नाली निर्माण के लिए 15 लाख रुपये, वार्ड क्रमांक 65 के एक नंबर दफाई भाटापारा में डीआई पाइपलाइन बिछाने



के लिए 16.18 लाख रुपये तथा वार्ड क्रमांक 64 के इमलीछापर परसाभांटा धनुहारपारा क्षेत्र से अमरजीत ऑफिस के पीछे तक डीआई पाइपलाइन बिछाने के लिए 2.12 लाख रुपये के कार्य शामिल हैं।

इस अवसर पर मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में शहर से लेकर गांव तक विकास कार्य तेजी से कराए जा रहे हैं। मूलभूत सुविधाओं से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। जिले के जर्जर आंगनबाड़ी और शासकीय स्कूल भवनों के स्थान पर नवीन भवनों का निर्माण भी किया जा रहा है। पेयजल पाइपलाइन और नाली निर्माण कार्य पूरे होने पर संबंधित क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति बेहतर होगी और गंदे पानी की निकासी के लिए समुचित व्यवस्था उपलब्ध होगी। इससे वार्डवासियों को मूलभूत सुविधाओं का लाभ मिलेगा। कार्यक्रम में वार्ड क्रमांक 64 स्थित प्राथमिक शाला इमलीछापर के पुराने और जर्जर भवन के स्थान पर जिला खनिज न्यास (डीएमएफ) मद से 31.30 लाख रुपये की लागत से निर्मित नवीन शाला भवन का लोकार्पण भी किया गया। नए भवन से बच्चों को सुरक्षित और सुविधाजनक शैक्षणिक वातावरण मिलेगा।

कार्यक्रम में नगर निगम कोरबा की महापौर श्रीमती संजू देवी राजपूत, सभापति नूतन सिंह ठाकुर सहित वार्ड एवं क्षेत्र के नागरिक उपस्थित रहे।

जानकारी

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने पोंगरो एनीकट हाइड्रो पावर पम्पिंग योजना का किया निरीक्षण

बिना बिजली और डीजल के खेतों तक पहुंचेगा सिंचाई का पानी : मुख्यमंत्री साय

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-जशपुर

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने जशपुर जिले के कांसाबेल विकासखंड अंतर्गत ग्राम पोंगरो में घुघरी नदी पर निर्मित एनीकट हाइड्रो पावर आधारित पम्पिंग योजना का स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने योजना की कार्यप्रणाली, सिंचाई क्षमता और किसानों को मिलने वाले लाभों की जानकारी ली। सरगुजा संभाग की अपनी तरह की इस पहली नवाचारी सिंचाई परियोजना की विशेषता यह है कि इसमें बिजली, डीजल, पेट्रोल अथवा सौर ऊर्जा का उपयोग किए बिना केवल नदी के जल प्रवाह से खेतों तक सिंचाई का पानी पहुंचाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि खेती की समृद्धि के लिए सिंचाई सुविधाओं का विस्तार हमारी सरकार की प्राथमिकता है। पोंगरो की यह परियोजना इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि आधुनिक विज्ञान और स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर उपयोग से किसानों की समस्याओं का स्थायी और पर्यावरण अनुकूल समाधान किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस तकनीक से किसानों को सिंचाई के लिए बिजली और डीजल पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा, जिससे खेती की लागत कम करने



में भी मदद मिलेगी। यह अभिनव पहल प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में भी सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए एक प्रेरक मॉडल बन सकती है।

नदी का जल प्रवाह ही बनेगा सिंचाई की ऊर्जा : पोंगरो एनीकट हाइड्रो पावर पम्पिंग योजना में नदी के बहते पानी की ऊर्जा से टरबाइन पम्प संचालित किया जाता है। इसके लिए पूर्व निर्मित एनीकट से लगभग 100 मीटर डाउनस्ट्रीम में प्लेटफॉर्म तैयार कर टरबाइन पम्प स्थापित किया गया है। यह पम्प नदी तल से लगभग 12 मीटर ऊंचाई पर स्थित तथा 200 मीटर दूर निर्मित वितरण टंकी तक अधिकतम 17 लीटर प्रति सेकंड की दर



से पानी पहुंचाने में सक्षम है। वितरण टंकी से पक्की सिंचाई नहरों एवं नालियों के माध्यम से खेतों तक पानी पहुंचाने की व्यवस्था की गई है। इस परियोजना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि पम्प संचालन के लिए किसी बाहरी ऊर्जा स्रोत की आवश्यकता नहीं है। इससे सिंचाई व्यवस्था के संचालन में पारंपरिक ईंधन की खपत और उससे होने वाले कार्बन उत्सर्जन से बचा जा सकेगा। यह परियोजना हरित ऊर्जा, जल संरक्षण और टिकाऊ कृषि की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

135 किसान परिवारों को मिलेगा सीधा लाभ : लगभग 2 करोड़ 68 लाख रुपए की लागत से पूर्ण की गई इस परियोजना से क्षेत्र के करीब 135 कृषक परिवारों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। योजना के माध्यम से लगभग 80 एकड़ कृषि क्षेत्र में रबी एवं ग्रीष्मकालीन फसलों के लिए सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। इससे किसानों को वर्षा आधारित खेती पर निर्भरता कम करने, अतिरिक्त फसल लेने और कृषि उत्पादन बढ़ाने के अवसर मिलेंगे। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में जल संसाधनों का बेहतर उपयोग करते हुए किसानों को वर्षभर खेती के अवसर उपलब्ध कराना हमारा संकल्प है। पोंगरो की यह पहल दर्शाती है कि नवाचार को गांवों और खेतों तक पहुंचाकर कृषि विकास को नई गति दी जा सकती है। हमारी सरकार किसानों की आय बढ़ाने, सिंचाई का दायरा विस्तृत करने और खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

इस अवसर पर श्रीमती कौशल्या साय, जिला पंचायत अध्यक्ष सालिक साय, कलेक्टर रोहित व्यास, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अभिषेक कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

संपादकीय

कांग्रेस के शासन व राहुल गांधी को सही ठहराने का प्रयास

कांग्रेस नेता सोनिया गांधी की नई किताब देश के बाजार में आज बिकने आ गई है और कांग्रेसियों सहित कांग्रेस समर्थक लोगों ने खूब खरीदा भी होगा। सवाल उठता है सोनिया गांधी को यह किताब लिखने की जरूरत क्यों महसूस हुई वह भी जब 2014 के बाद से मोदी युग शुरू हुआ और इस युग के 12 साल बीतने के बाद भी कांग्रेस के सत्ता में लौटने की निकट भविष्य में कोई उम्मीद दिखाई नहीं देती है। इसकी दो प्रमुख वजहें यह हो सकती हैं कि एक तो पांच से चौदह तक के शासन कांग्रेस शासन को अच्छा बताना और दूसरे राहुल गांधी को हर तरह से सही बताना। मनमोहन सिंह के शासन को सही बताना सोनिया गांधी के लिए जितना जरूरी था उससे ज्यादा जरूरी हर तरह के असफल राहुल गांधी को सही बताना जरूरी था यानी राहुल गांधी भले चुनाव नहीं जिता पाए लेकिन वह सही थे इन्हीं प्रयास बहुत किया,निरंतर प्रयास किया, लेकिन वह कांग्रेस के सफल नेताओं में अपना शुमार नहीं करा सके, एक लोकसभा चुनाव भी जीते होते तो वह अन्य कांग्रेस नेताओं की पंक्ति में उनको शामिल किया जा सकता था। सोनिया गांधी इस किताब के जरिए राहुल गांधी को आश्वस्त करती हैं कि जिस तरह मैं तुमको असफल नहीं मानती उस तरह और भी बहुत लोग हैं जो तुमको असफल नहीं मानते हैं।

किताबें तो गांधी परिवार व गांधी परिवार के प्रधानमंत्रियों के शासनकाल पर बहुत सारी किताबें लिखी गई हैं। सोनिया गांधी व राहुल गांधी पर बहुत सारी लिखी जा चुकी हैं और आगे लिखी भी जाएंगी लेकिन गांधी परिवार से किसी ने आज तक कोई किताब नहीं लिखी थी क्योंकि उनको जरूरत महसूस नहीं हुई थी,सोनिया गांधी को जरूरत इसलिए महसूस हुई कि कोई आने वाला समय भाजपा का है और भाजपा के समय भारत के विकास की तमाम बातें ही लिखी,पढ़ी व कही जाएंगी ऐसे में सोनिया गांधी की किताबों से भाजपा के शासन के बुरे पक्ष को बताना जरूरी था और यह चूंकि सोनिया गांधी ने लिखा है इसलिए आने वाले समय में भाजपा व मोदी विरोधी लोग सोनिया गांधी की बातों को दुहराकर बताते रहेंगे कि भाजपा के शासन की बुराइयां क्या थीं।पीएम मोदी कहते हैं कि कांग्रेस की आलोचना उनके शासन काल के माथे पर काला टीका है तो सोनिया गांधी की कि बात के बारे में भी यही कहा जा सकता है कि वह मोदी के समय के भाल पर नजर न लगने का काला टीका है।

किताब मार्केट में आने के पहले उनके बयानों से साफ है कि उन्होंने जानबूझकर ऐसा कुछ कहा जिससे उसकी खूब चर्चा हो और ज्यादा से ज्यादा लोग किताब पढ़ने के लिए खरीदें।जैसे बाबरी मस्जिद के बार में उनका यह कहना कि जब उन्होंने टीवी पर बाबरी मस्जिद तो ढहते देखा तो उनकी आंखों में आंसू आ गए थे। यह उनके मुसलमानों को खुश करने वाला दूसरा बयान है इससे पहले उन्होंने इशरत के मारे जाने पर यही वाक्य कहा था और उसकी आज तक चर्चा होती है ।यूपी में चुनाव होने हैं और कांग्रेस को यूपी में मुसलमानों के वोट मिलने पर ही वह मजबूत हो सकती है, इसलिए राहुल गांधी व कांग्रेस की सफलता के लिए यह बयान जानबूझकर दिया गया है ।उनके झूठ के पोल भाजपा के सुधांशु त्रिवेदी ने यह कह खोल दी है कि सोनिया गांधी को बताना चाहिए कि किस चैनल पर उन्होंने बाबरी मस्जिद के ढांचे तो गिरते हुए देखा था।

इसी तरह आपातकाल कांग्रेस के इतिहास का काला धब्बा है। यह अमिट काला धब्बा है,वैसे तो माना जाता है इसके लिए इंदिरा गांधी ने माफी भी मांगी थी। इसके बाद तो इसका जिक्र सोनिया गांधी को नहीं करना था लेकिन उन्होंने किया है तो इसलिए कि वह देश के सामने साफ कर देना चाहती थी कि कांग्रेस के इतिहास की इस गलती के लिए उनका परिवार यानी राजीव गांधी,सोनिया गांधी व राहुल गांधी जरा भी जिम्मेदार नहीं था, इसके लिए जिम्मेदार बताना जरूरी था इसलिए संजय गांधी व तत्कालीन वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं को बताया गया है। इंदिरा गांधी के बाद सोनिया गांधी ने एक तरह से आपातकाल के दाग को हल्का करने का प्रयास किया है लेकिन भाजपा जब तक सत्ता में है वह हर साल इस दाग को गहरा करने का प्रयास करती रहेगी क्योंकि यह तो कांग्रेस की तानाशाही का ऐतिहासिक प्रमाण है,

राहुल गांधी को सही बताने के लिए कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने अपनी नई किताब में मोदी सरकार के कामकाज और नीतियों की तीखी आलोचना की है। उन्होंने दावा किया कि मोदी सरकार के कार्यकाल में उदार लोकतंत्र वाले देशों की सूची में भारत का स्थान काफी नीचे खिसक गया है और भाजपा ने लोकतांत्रिक संस्थाओं को व्यवस्थित ढंग से कमजोर किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पीछे काम कर रही वैचारिक ताकतें उस व्यवस्था को कमजोर कर रही हैं, जिसने करीब 80 वर्षों से विभिन्न भाषाओं, मान्यताओं और परंपराओं वाले विविधतापूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधे रखा है ।टेलीविजन के एंकर और निजी चैनल कभी काफी हद तक विश्वसनीय और स्वतंत्र हुआ करते थे तथा दर्शकों को अलग-अलग विचारों से परिचित कराते थे। आज वे सरकार के प्रचार तंत्र बनकर रह गए हैं। उन्होंने कहा कि कई असहमति जताने वालों को झूठे आरोपों में बिना जमानत या मुकदमे के जेल में डाल दिया गया है। भाजपा के शासन में सार्वजनिक प्रदर्शनों की गुंजाइश काफी सीमित कर दी गई है।

बच्चों का इंटरनेट अधिकार : प्रतिबंध नहीं, सुरक्षित डिजिटल संसार की जरूरत

डॉ. प्रियंका सौरभ

इक्कीसवीं सदी में इंटरनेट केवल मनोरंजन या संवाद का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि शिक्षा, सूचना, अभिव्यक्ति और सामाजिक सहभागिता का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। विशेषकर बच्चों के लिए डिजिटल दुनिया ज्ञान के नए द्वार खोलती है। ऐसे समय में बच्चों को इंटरनेट से पूरी तरह वंचित करना उनके विकास के अवसरों को सीमित करने जैसा है। सर्वोच्च न्यायालय ने बच्चों की इंटरनेट तक पहुँच के अधिकार से जुड़े अपने दृष्टिकोण में स्पष्ट किया है कि सुरक्षा के नाम पर व्यापक और एकमुश्त प्रतिबंध उचित समाधान नहीं हो सकते। संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) के तहत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अनुच्छेद 21 के तहत जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार की व्यापक व्याख्या में डिजिटल पहुँच का महत्व भी सामने आता है। हालांकि, इस अधिकार का अर्थ यह नहीं है कि बच्चों को बिना किसी सुरक्षा व्यवस्था के इंटरनेट की खुली छूट दे दी जाए।



बच्चों के शैक्षणिक विकास में इंटरनेट की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन कक्षाएँ, शैक्षणिक वीडियो, आभासी प्रयोगशालाएँ और विभिन्न शिक्षण मंच पारंपरिक शिक्षा के पूरक बन चुके हैं। केंद्र सरकार के दीक्षा (DIKSHA) मंच और पीएम ई-विद्या जैसी पहल ने डिजिटल शिक्षा को व्यापक बनाने में योगदान दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों के लिए इंटरनेट गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री तक पहुँच का माध्यम बन सकता है। जिन विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक, पुस्तकालय या अन्य संसाधन उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ डिजिटल माध्यम शिक्षा की कमियों को काफी हद तक पूरा कर सकते हैं।

इंटरनेट बच्चों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उनकी रचनात्मकता और स्वतंत्र चिंतन को भी प्रोत्साहित करता है। वे विज्ञान, साहित्य, इतिहास, पर्यावरण, कला और तकनीक जैसे विषयों पर अपनी रुचि के अनुसार जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अपनी कविताएँ, कहानियाँ, चित्र और विचार साझा कर सकते हैं। इससे उनमें अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास और संवाद की क्षमता विकसित होती है। सूचना का अधिकार भी इंटरनेट के माध्यम से अधिक प्रभावी बनता है। बच्चे अपने आसपास की सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं को समझकर जागरूक नागरिक बनने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

डिजिटल पहुँच समावेशी शिक्षा के लिए भी आवश्यक है। दिव्यांग बच्चों के लिए स्क्रीन रीडर, ऑडियो पुस्तकें, सांकेतिक भाषा आधारित सामग्री और अन्य सहायक तकनीकें शिक्षा को अधिक सुलभ बनाती हैं। दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों को भी देश-दुनिया के शैक्षणिक संसाधनों से जुड़ने का अवसर मिलता है। इंटरनेट डिजिटल साक्षरता विकसित करता है, जो भविष्य के रोजगार और उद्यमिता के लिए आवश्यक कौशल बन चुकी है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑनलाइन शोध, डिजिटल संचार और तकनीकी नवाचार के दौर में बच्चों को डिजिटल दुनिया से दूर रखना उनके भविष्य की संभावनाओं को कमजोर कर सकता है।

हालाँकि, इंटरनेट के लाभों के साथ गंभीर चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा आज अभिभावकों, शिक्षकों, सरकार और डिजिटल मंचों के सामने बड़ी जिम्मेदारी है। ऑनलाइन यौन शोषण, बच्चों को बहला-फुसलाकर अनुचित गतिविधियों में शामिल करना, साइबर बुलिंग, अश्लील सामग्री, फर्जी पहचान और डिजिटल धोखाधड़ी जैसी घटनाएँ बच्चों की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा हैं। कई बार बच्चे अनजान व्यक्तियों से संपर्क में आ जाते हैं और अपनी निजी जानकारी, तस्वीरें या स्थान संबंधी विवरण साझा कर देते हैं। इसका दुरुपयोग उनके मानसिक और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सकता है।

साइबर बुलिंग भी एक गंभीर समस्या है। सोशल मीडिया पर अपमानजनक टिप्पणियाँ, धमकियाँ, मजाक उड़ाना और निजी तस्वीरों का दुरुपयोग बच्चों के आत्मविश्वास तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल मंचों द्वारा बच्चों के व्यवहार, पसंद और व्यक्तिगत जानकारी का अत्यधिक संग्रह उनकी निजता के अधिकार के लिए चुनौती है। एल्गोरिदम आधारित सामग्री बच्चों को लगातार स्क्रीन पर बनाए रखने का प्रयास करती है, जिससे उनकी पढ़ाई, नींद, शारीरिक गतिविधियों और सामाजिक संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

इसलिए समाधान इंटरनेट पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने में नहीं, बल्कि सुरक्षित और जिम्मेदार डिजिटल वातावरण तैयार करने में निहित है। सर्वोच्च न्यायालय के अधिकार-आधारित दृष्टिकोण का मूल संदेश भी यही है कि बच्चों की सुरक्षा के लिए अपनाए जाने वाले उपाय तर्कसंगत, आनुपातिक और उद्देश्य के अनुरूप होने चाहिए। किसी विशेष खतरे के समाधान के नाम पर सभी बच्चों की इंटरनेट पहुँच समाप्त कर देना उचित नहीं है। प्रतिबंधों के बजाय जोखिम के अनुसार सुरक्षा उपाय अपनाने चाहिए।

सबसे पहले, डिजिटल मंचों को बच्चों के अनुकूल बनाया जाना आवश्यक है। बच्चों के खातों में निजता संबंधी व्यवस्थाएँ पहले से सुरक्षित होनी चाहिए। अनजान व्यक्तियों के संदेशों, अनुचित संपर्कों और संवेदनशील सामग्री तक पहुँच को सीमित करने की व्यवस्था होनी चाहिए। बच्चों के व्यक्तिगत आँकड़ों का अनावश्यक संग्रह और व्यावसायिक उपयोग रोका जाना चाहिए। आयु के अनुरूप सामग्री उपलब्ध कराने और हानिकारक सामग्री की पहचान करने के लिए प्रभावी तकनीकी व्यवस्थाएँ विकसित करनी चाहिए।

दूसरा, अभिभावकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बच्चों पर केवल निगरानी रखने के बजाय उनके साथ विश्वास और संवाद का संबंध विकसित करना होगा। उन्हें समझाना होगा कि इंटरनेट पर प्रत्येक व्यक्ति विश्वसनीय नहीं होता और निजी जानकारी साझा करना जोखिमपूर्ण हो सकता है। अभिभावकीय सहमति, आयु के अनुरूप नियंत्रण और समय-समय पर संवाद के माध्यम से बच्चों को जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार सिखाया जा सकता है। बच्चों की निजता और स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए मार्गदर्शन देना आवश्यक है।

तीसरा, डिजिटल सुरक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषदों (SCERT) के माध्यम से साइबर सुरक्षा, डिजिटल शिष्टाचार, ऑनलाइन धोखाधड़ी, निजता और सूचना की सत्यता से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं। बच्चों को यह भी सिखाना होगा कि इंटरनेट पर उपलब्ध प्रत्येक जानकारी सही नहीं होती। किसी भी संदिग्ध गतिविधि या अनुचित संपर्क की स्थिति में उन्हें बिना भय के अभिभावकों और शिक्षकों को बताने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

चौथा, डिजिटल मंचों की जवाबदेही सुनिश्चित करना अनिवार्य है। बच्चों के यौन शोषण से संबंधित सामग्री की पहचान, उसे हटाने और संबंधित एजेंसियों तक सूचना पहुँचाने के लिए प्रभावी तंत्र होना चाहिए। साइबर अपराधों की शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया सरल और बच्चों के अनुकूल बनाई जानी चाहिए। बाल हेल्पलाइन 1098 और राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल जैसी व्यवस्थाओं के बारे में बच्चों तथा अभिभावकों को जागरूक करना चाहिए। पुलिस, विद्यालयों और बाल संरक्षण संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय भी आवश्यक है।

अंततः, बच्चों को इंटरनेट से दूर रखना उनके भविष्य को सुरक्षित करने का स्थायी उपाय नहीं है। उन्हें डिजिटल दुनिया में सुरक्षित रूप से आगे बढ़ने योग्य बनाना ही वास्तविक बाल संरक्षण है। अधिकार और सुरक्षा एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक होने चाहिए। जिस प्रकार सड़क सुरक्षा के लिए यातायात पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाया जाता, बल्कि नियम, संकेत और सावधानियाँ अपनाई जाती हैं, उसी प्रकार डिजिटल दुनिया में भी सुरक्षा के संतुलित उपाय आवश्यक हैं।

बच्चों के हाथों से इंटरनेट छीनने के बजाय उनके हाथों में डिजिटल विवेक देना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। प्रतिबंध भय पैदा कर सकते हैं, लेकिन शिक्षा, जागरूकता और जवाबदेही ही सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सकती है।

भाई दूज: रक्षा के वचन से आगे, बराबरी के अधिकारों की दरकार

अजय कुमार

भाई दूज पर बहन भाई के माथे पर तिलक लगाती है और उसकी लंबी उम्र की कामना करती है। भाई उपहार देता है, साथ निभाने का वचन देता है और परिवार इस रिश्ते की आत्मीयता का उत्सव मनाता है। लेकिन इस रस्म के बीच एक सवाल अनिवार्य है : जिस बहन के हाथों तिलक लगवाकर भाई अपनी सलामती की दुआ मांगता है, क्या उसी बहन को वह अपने घर और समाज में बराबरी देता है? क्या उसकी इच्छा, शिक्षा, संपत्ति, रोजगार और फैसलों को भी उतना ही सम्मान मिलता है, जितना त्योहार की परंपरा को? यदि नहीं, तो भाई दूज की चमक के पीछे एक बड़ी सामाजिक विसंगति छिपी है। बहन की लंबी उम्र की कामना तभी सार्थक है, जब उसे सम्मान और स्वतंत्रता के साथ जीने का अवसर भी मिले। भाई दूज कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। इस पर्व की कथा यमराज और उनकी बहन यमुना से जुड़ी है। मान्यता है कि यमराज अपनी बहन के घर पहुंचे। यमुना ने उनका तिलक किया और प्रेमपूर्वक भोजन कराया। बहन के स्नेह से प्रसन्न होकर यमराज ने वरदान दिया कि इस दिन बहन के हाथों तिलक करवाने वाले भाई को अकाल मृत्यु का भय नहीं रहेगा। इसी कारण इसे यम द्वितीया भी कहा जाता है। कृष्ण और सुभद्रा की कथा भी भाई-बहन के स्नेह की याद दिलाती है। इन कथाओं का मूल भाव अपनापन, विश्वास और एक-दूसरे के कल्याण की कामना है। परंपरा का सम्मान केवल कथा दोहराने से नहीं, बल्कि उसके भीतर छिपे मानवीय मूल्य को जीवन में उतारने से होता है।



भारतीय समाज में बहन के प्रति स्नेह की कमी नहीं दिखाई देती, लेकिन उसके अधिकारों के सवाल पर यही स्नेह अक्सर शर्तों में बदल जाता है। त्योहार पर बहन को उपहार दिया जाता है, मगर पैतृक संपत्ति में हिस्सा मांगने पर कई परिवारों में रिश्तों और संस्कारों की दुहाई दी जाने लगती है। बेटी से कहा जाता है कि उसका असली घर ससुराल है, इसलिए मायके की संपत्ति पर उसका दावा उचित नहीं है। यह सोच न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि उस बराबरी के भी विरुद्ध है जिसकी गारंटी कानून देता है। हिंदू उत्तराधिकार कानून में 2005 के संशोधन के बाद बेटियों को पैतृक संपत्ति में बेटों के समान अधिकार मिला है। बहन का हक कोई भाई अपनी उदारता से नहीं देता; वह उसका अधिकार है। अधिकार को उपहार बताना भी अन्याय को परंपरा का आवरण पहनाना है। भाई दूज को केवल बहन की रक्षा के वचन तक सीमित करना भी रिश्ते की अधूरी व्याख्या है। रक्षा के नाम पर उसकी आवाजाही रोकना, कपड़ों पर टिप्पणी करना, मित्रता पर शक करना या जीवन के फैसले अपने हाथ में लेना संरक्षण नहीं, बल्कि नियंत्रण है। जिस घर में बेटे की स्वतंत्रता को स्वाभाविक और बेटी की स्वतंत्रता को खतरा समझा जाता है, वहां भाई दूज का तिलक बराबरी का संदेश नहीं दे पाता। सुरक्षा का अर्थ महिलाओं को घरों में बंद रखना नहीं, बल्कि घर से बाहर तक ऐसा माहौल बनाना है, जहां वे बिना भय और भेदभाव के रह सकें। बहन को भरोसा चाहिए, पहरेदारी नहीं; साथ चाहिए, अनुमति देने वाला अभिभावक नहीं।

महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में बदलाव के संकेत जरूर मिले हैं। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार, 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की महिलाओं की श्रमबल भागीदारी दर 2017-18 में 23.3 प्रतिशत थी, जो 2023-24 में बढ़कर 41.7 प्रतिशत हो गई। हालांकि, श्रमबल भागीदारी दर में काम कर रहीं और काम की तलाश कर रहीं, दोनों तरह की महिलाएं शामिल होती हैं। रोजगार में लगी महिलाओं का अनुपात बताने वाला श्रमिक जनसंख्या अनुपात 2017-18 में 22 प्रतिशत था, जो 2023-24 में बढ़कर 40.3 प्रतिशत हो गया। इन सकारात्मक बदलावों के बावजूद महिलाओं के सामने कम वेतन, असुरक्षित कार्यस्थल, घरेलू काम का असमान बोझ और अपनी कमाई पर सीमित नियंत्रण जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं। बहन को महंगा उपहार देने से अधिक जरूरी है कि उसके रोजगार, कारोबार, पढ़ाई और आर्थिक फैसलों में परिवार उसका साथ दे। आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल कमाना नहीं, बल्कि अपनी कमाई और जीवन पर अधिकार होना भी है। यदि बहन अपनी मेहनत की कमाई खर्च करने के लिए भी किसी की अनुमति पर निर्भर है, तो आर्थिक स्वतंत्रता का दावा अधूरा है।

सुरक्षा का सवाल इस पर्व के भावनात्मक संदेश को सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ता है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के 2024 के आंकड़ों के मुताबिक, देश में महिलाओं के खिलाफ 4,41,534 मामले दर्ज हुए। उत्तर प्रदेश में ऐसे 66,398 मामले दर्ज किए गए। ये दर्ज मामले हैं। इनके अलावा सामाजिक दबाव, बदनामी के भय और व्यवस्था पर अविश्वास के कारण अनेक घटनाएं शिकायत तक नहीं पहुंच पातीं। पुलिस, प्रशासन, न्याय व्यवस्था, शिक्षण संस्थानों और परिवारों सभी की जवाबदेही है। भाई का वचन तभी अर्थ रखता है, जब समाज बेटियों को सुरक्षित सार्वजनिक स्थान, त्वरित न्याय और बिना डर अपनी बात कहने का अधिकार दे। महिलाओं की सुरक्षा को केवल भाई या पिता की निजी जिम्मेदारी बताकर संस्थाओं और समाज को जवाबदेही से मुक्त नहीं किया जा सकता।

इस पर्व की खूबसूरती उसकी विविधता में भी है। उत्तर भारत में भाई दूज या यम द्वितीया, बंगाल में भाई फोंटा, महाराष्ट्र और गोवा में भाऊ बीज तथा नेपाल में भाई टीका के रूप में यह परंपरा निभाई जाती है। रीति-रिवाज अलग हैं, लेकिन केंद्र में भाई-बहन का स्नेह है। तकनीक ने दूर रहने वाले भाई-बहनों के लिए संवाद आसान किया है, लेकिन रिश्ते की असली मजबूती रोजमर्रा के व्यवहार से तय होती है। बहन की परेशानी में साथ खड़ा होना, उसके निर्णय का सम्मान करना और जरूरत पड़ने पर बिना शर्त मदद करना किसी औपचारिक शुभकामना से बड़ा है। यह रिश्ता एकतरफा संरक्षण नहीं, बल्कि परस्पर सहयोग का होना चाहिए। भाई दूज का अर्थ तभी पूरा होगा, जब बहन को परिवार की बराबर की सदस्य माना जाएगा सिर्फ त्योहार पर नहीं, बल्कि रोजमर्रा के जीवन में भी। उसे संपत्ति में हिस्सा मांगने पर अपराध बोध न हो, पढ़ाई और नौकरी चुनने के लिए अनुमति की मोहताज न होना पड़े और उसकी असहमति को बदतमीजी न कहा जाए।

भाइयों को समझना होगा कि बहन की रक्षा का सबसे मजबूत तरीका उसे निर्भर बनाए रखना नहीं, बल्कि उसके अधिकारों और आत्मविश्वास को मजबूत करना है। माथे पर लगा तिलक कुछ घंटों में मिट जाएगा, मिठाई खत्म हो जाएगी और त्योहार की रौनक भी उतर जाएगी। लेकिन बहन को दिया गया सम्मान, उसके अधिकारों की स्वीकृति और मुश्किल समय में निभाया गया भरोसा जीवन भर साथ रहेगा। इस भाई दूज पर भाई की लंबी उम्र की दुआ के साथ बहन की स्वतंत्र, सुरक्षित और गरिमापूर्ण जिंदगी का संकल्प भी जरूरी है। क्योंकि बहन को केवल बचाने की नहीं, बल्कि बराबरी से जीने देने की जरूरत है। यही इस पर्व का सच्चा संदेश है, आज भी।

कैंसर की दवाओं पर सुप्रीम कोर्ट की सख्ती से मरीजों को मिली बड़ी राहत

सौरभ वार्ष्णेय

कैंसर का नाम सुनते ही किसी भी परिवार के सामने सबसे पहले जिंदगी और मौत का सवाल खड़ा हो जाता है। यह ऐसी बीमारी है, जिसका इलाज न केवल मरीज को शारीरिक और मानसिक रूप से तोड़ता है, बल्कि पूरे परिवार की आर्थिक कमर भी तोड़ देता है। इलाज की लंबी प्रक्रिया, महंगी जांच, अस्पतालों का खर्च और जीवनरक्षक दवाओं की कीमतें पहले से परेशान परिवारों के लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं होतीं। ऐसे में कैंसर की 137 दवाओं की कीमतों में भारी कटौती होना निश्चित रूप से लाखों मरीजों और उनके परिजनों के लिए राहत भरी खबर है। लेकिन इस फैसले के पीछे छिपी सच्चाई देश की स्वास्थ्य व्यवस्था और दवा कारोबार पर गंभीर सवाल भी खड़े करती है।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार, कैंसर की 137 दवाओं की कीमतें कम की गई हैं। दवा कंपनियों ने 121 दवाओं के 1,364 फॉर्मूलेशन की नई कीमतें जारी की हैं। इनमें 679 ब्रांड की दवाओं के दाम 50 प्रतिशत से अधिक घटाए गए हैं। कुछ दवाओं की कीमतों में तो 96.45 प्रतिशत तक की कमी की गई है। अनुमान है कि इस कदम से मरीजों को सालाना करीब 3,540.38 करोड़ रुपये की बचत होगी। यह आंकड़ा अपने आप में बताता है कि अब तक कैंसर के इलाज के नाम पर आम आदमी की जेब पर कितना बड़ा आर्थिक बोझ पड़ रहा था। इस पूरे मामले में सुप्रीम कोर्ट की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। 22 सितंबर को सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने कैंसर की दवाओं की रिटेल कीमत और अधिकतम खुदरा मूल्य के बीच भारी अंतर पर गंभीर सवाल उठाए थे। अदालत की टिप्पणी थी कि 2,700 रुपये की दवा मरीज को 27,000 रुपये में मिलना दिनदहाड़े डकैती और नरसंहार जैसा है। न्यायालय की यह नाराजगी केवल दवाओं की कीमतों को लेकर नहीं थी, बल्कि उस व्यवस्था पर भी सवाल था, जिसमें गंभीर बीमारी से जूझ रहे मरीजों की मजबूरी को कारोबार और मुनाफे का अवसर बना लिया जाता है।



सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी के बाद 17 अक्टूबर को नेशनल फार्मास्यूटिकल प्राइसिंग अथॉरिटी ने 137 गैर-अनुसूचित कैंसर दवाओं पर कंपनियों का ट्रेड मार्जिन 30 प्रतिशत निर्धारित किया। इसी निर्णय के बाद कीमतों में कमी का रास्ता साफ हुआ। डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ हेल्थ सर्विसेज के तहत गठित विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों ने भी इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। समिति में देश के प्रमुख कैंसर विशेषज्ञों, चिकित्सकों, अस्पतालों के प्रतिनिधियों और सरकारी अधिकारियों को शामिल किया गया था। इसका उद्देश्य दवाओं की कीमतों और व्यापारिक मार्जिन को तर्कसंगत बनाना था।

यहां सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर जीवन बचाने वाली दवाओं के कारोबार में इतना अधिक मुनाफा कैसे संभव हुआ? क्या किसी गंभीर बीमारी से जूझ रहे मरीज की विवशता का फायदा उठाना उचित है? दवा उद्योग का अपना आर्थिक पक्ष है। कंपनियों को अनुसंधान, उत्पादन, गुणवत्ता नियंत्रण, वितरण और नई दवाओं के विकास पर खर्च करना पड़ता है। लेकिन इन सभी खर्चों के नाम पर ऐसी कीमतें वसूलना, जिन्हें आम आदमी वहन ही न कर सके, किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। दवा कोई सामान्य उपभोक्ता वस्तु नहीं है। यह किसी व्यक्ति के जीवन, उसके परिवार की उम्मीद और उसके भविष्य से जुड़ी होती है।

भारत जैसे देश में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच आज भी आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती है। संपन्न परिवार बेहतर अस्पतालों और महंगे उपचार का खर्च उठा सकते हैं, लेकिन मध्यमवर्गीय और गरीब परिवारों के सामने अक्सर इलाज जारी रखने या घर की आर्थिक स्थिति बचाने के बीच कठिन चुनाव करने की नौबत आ जाती है। कई बार लोग जमीन, मकान और पुश्तैनी संपत्ति तक बेच देते हैं। कुछ परिवार कर्ज में डूब जाते हैं तो कुछ आर्थिक असमर्थता के कारण उपचार अधूरा छोड़ ? को मजबूर हो जाते हैं। ऐसे हालात में दवाओं की कीमतों पर नियंत्रण केवल आर्थिक नीति का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और मानवीय संवेदनशीलता का प्रश्न है।

हालांकि, केवल कीमतें घटा देना ही पर्याप्त नहीं होगा। सरकार और संबंधित नियामक संस्थाओं को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि निर्धारित कीमतों का लाभ वास्तव में मरीजों तक पहुंचे। दवा दुकानों, अस्पतालों और वितरकों के स्तर पर नियमित निगरानी होनी चाहिए। यदि कोई कंपनी या विक्रेता निर्धारित मूल्य से अधिक वसूली करता है तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि आवश्यक दवाओं की उपलब्धता बनी रहे और कीमतों पर नियंत्रण के नाम पर उनकी आपूर्ति प्रभावित न हो।

विशेषज्ञ समिति द्वारा सुझाई गई 137 दवाओं की सूची को समय-समय पर अपडेट करने का निर्णय भी महत्वपूर्ण है। कैंसर के उपचार में लगातार नई दवाएं और तकनीकें सामने आ रही हैं। इसलिए मूल्य नियंत्रण की व्यवस्था भी समय और जरूरत के अनुसार विकसित होनी चाहिए। सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नई और प्रभावी दवाएं भी आम मरीजों की पहुंच से बाहर न हों। सरकारी अस्पतालों में कैंसर उपचार की सुविधाओं का विस्तार, जांच की सुलभता और स्वास्थ्य बीमा योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन भी उतना ही आवश्यक है।

दरअसल, किसी भी सभ्य समाज की पहचान इस बात से होती है कि वह अपने सबसे कमजोर और जरूरतमंद नागरिकों के साथ कैसा व्यवहार करता है। कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से लड़ रहे मरीजों के लिए दवाओं की कीमत कम होना महज एक आर्थिक राहत नहीं, बल्कि जीवन की उम्मीद को मजबूत करने वाला कदम है। सुप्रीम कोर्ट की सख्ती ने इस दिशा में महत्वपूर्ण हस्तक्षेप किया है। लेकिन इस राहत को स्थायी व्यवस्था में बदलना सरकार, दवा कंपनियों और नियामक संस्थाओं की सामूहिक जिम्मेदारी है।

जीवन बचाने वाली दवाएं मुनाफे का असीमित माध्यम नहीं बननी चाहिए। स्वास्थ्य सेवा का उद्देश्य केवल कारोबार नहीं, बल्कि मानव जीवन की रक्षा होना चाहिए। कैंसर से लड़ रहे मरीजों को बीमारी से संघर्ष करना चाहिए, दवाओं की कीमतों और आर्थिक शोषण से नहीं। यही इस फैसले का वास्तविक संदेश और एक संवेदनशील स्वास्थ्य व्यवस्था की कसौटी है।



....ऐसे शुरू हुई नूपुर सेनन की लव स्टोरी



गायक स्टेबिन बेन और नूपुर सेनन हाल ही में नेहा धूपिया और अंगद बेदी के शो 'डबल डेट' में पहुंचे, जहां इस कपल ने अपनी दिलचस्प प्रेम कहानी का खुलकर जिक्र किया। शो के दौरान स्टेबिन बेन ने बताया कि उन्होंने पहली बार 2016 में नूपुर को कोलैब के लिए मैसेज किया था। स्टेबिन ने बताया, 'हम दोनों को म्यूजिक से बहुत प्यार था। नूपुर क्लासिकली ट्रेन सिंगर हैं और मैंने कोई प्रोफेशनल ट्रेनिंग नहीं ली है, लेकिन मैं गाता था।' स्टेबिन बेन ने बताया, 'इसी तरह हम इंस्टाग्राम पर एक-दूसरे के काम की तारीफ करते-करते बातें करने लगे। मैंने नूपुर को बहुत साल पहले 2016 में कोलैब के लिए डीएम (डायरेक्ट मैसेज) किया था, तब वो यूट्यूबर थीं। नूपुर ने बताया कि उन्होंने स्टेबिन का मैसेज लगभग 4 साल तक देखा ही नहीं था। 2020 में जब उन्होंने स्टेबिन का गाया हुआ 'मेरा दिल भी कितना पागल है' का कवर सुना, तब पहली बार उन्होंने उनकी आवाज सुनी और उन्हें उनकी आवाज बहुत पसंद आई। नूपुर ने याद करते हुए बताया, 'उस समय मैं सिंगल थी और एक दिन मैंने इंस्टाग्राम पर स्टेबिन का डीएम देखा। उन्होंने यह मैसेज 2016 में कोलैब के लिए भेजा था। उनके मैसेज में कुछ अलग वाइब और एनर्जी थी, इसलिए मैंने रिप्लाई किया और हमारी बातें शुरू हो गईं। वो मुझे गानों के वॉइस नोट भेजते थे और मुझे वो बहुत पसंद आते थे।' नूपुर सेनन और प्रसिद्ध भारतीय गायक स्टेबिन बेन ने जनवरी 2026 में उदयपुर में शादी की थी। यह शाही शादी उदयपुर में उदयसागर झील के बीच स्थित रेफल्स होटल में हुई। कपल ने दो अलग-अलग रीति-रिवाजों से शादी की थी। उन्होंने पहले 10 जनवरी 2026 को क्रिश्चियन रीति-रिवाज से सफेद गाउन और सूट पहनकर वाइट वेडिंग की। इसके बाद पारंपरिक हिंदू रीति-रिवाजों से सात फेरे लिए। हिंदू विवाह समारोह के दौरान नूपुर ने पीच और ऑरेंज रंग का खूबसूरत डुअल-टोन लहंगा पहना था।



नागिन से बॉलीवुड की ग्लैमर क्वीन तक का सफर किया तय

टीवी और अब बॉलीवुड की दुनिया में धमाल मचा रही अभिनेत्री मौनी रॉय को यूं तो कई रोल्स के लिए जाना जाता है। जहां उन्होंने करियर की शुरुआत में 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में कृष्णा तुलसी का किरदार निभाया, तो 'देवों के देव... महादेव' में सती बनकर लोगों के बीच पहचान बनाई, लेकिन असली लोकप्रियता उन्हें 'नागिन' सीरियल से मिली। वह नागिन के किरदार से घर-घर में पहचानी जाने लगीं। जिस अभिनेत्री ने नागिन बनकर लोगों के मन में एक खौफ पैदा किया, वो असल जिंदगी में खुद नागों से डरती हैं। सांपों के प्रति उनका डर बचपन से ही है और इसका खुलासा उन्होंने फराह खान के यूट्यूब व्लॉग में किया। दरअसल, हाल ही में फराह खान अपने कुक दिलीप के साथ मौनी रॉय के नए घर गई थीं। वहीं दोनों के बीच खूब सारी बातें हुईं। बातचीत के दौरान मौनी ने बताया कि वह बचपन से ही सांपों से बहुत डरती हैं। उन्होंने कहा, 'लोग सोचते हैं कि मैंने नागिन का रोल किया है तो मुझे सांपों से प्यार होगा, लेकिन सच इसके बिल्कुल उल्टा है। मुझे सांपों से बहुत डर लगता है।' मौनी ने सीरियल 'नागिन' के दिनों को याद करते हुए बताया कि शूट के दौरान उन्हें असली सांपों के साथ नहीं, बल्कि वीएफएक्स और डमी सांपों के साथ शूट करना पड़ता था। फिर भी जब भी उन्हें सांप जैसा कुछ भी दिखता था तो वह घबरा जाती थीं। मौनी ने 'नागिन' से पहले और बाद में कई यादगार किरदार निभाए हैं। 'गोल्ड', 'मेड इन चाइना' और 'ब्रह्मास्त्र' में जूनून के किरदार ने उन्हें बॉलीवुड में एक अलग पहचान दिलाई। 28 सितंबर को मौनी 40 साल की हो गई हैं। उनका यह डर वाला किस्सा सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। फैंस कमेंट कर रहे हैं कि यह जानकर हैरानी हुई कि ऑन-स्क्रीन सबसे खतरनाक नागिन ऑफ-स्क्रीन इतनी डरपोक है। फराह खान के इस व्लॉग के बाद मौनी एक बार फिर सुर्खियों में आ गई हैं और उनका क्यूट डर फैंस को काफी पसंद आ रहा है।

मौनी को पहला बड़ा ब्रेक 2007 में एकता कपूर के सुपरहिट शो 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' से मिला, जिसमें उन्होंने कृष्णा तुलसी का किरदार निभाया। इसके बाद उन्होंने 'कस्तूरी', 'देवों के देव...महादेव' जैसे शोज किए। 'महादेव' में सती के किरदार ने उन्हें घर-घर में पहचान दिलाई। लेकिन असली स्टारडम उन्हें 2015 में आई एकता कपूर की ही सीरीज 'नागिन' से मिला। शिवन्या और शिवांगी के डबल रोल में मौनी ने टीआरपी के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। 'नागिन' और 'नागिन 2' ने उन्हें टेलीविजन की सबसे महंगी और सबसे लोकप्रिय अभिनेत्रियों में शुमार कर दिया। टीवी पर सफलता के बाद मौनी ने बड़े पर्दे का रुख किया। 2018 में अक्षय कुमार के साथ फिल्म 'गोल्ड' से उन्होंने बॉलीवुड डेब्यू किया। फिल्म हिट रही और मौनी की एक्टिंग को सराहा गया। इसके बाद वह 'मेड इन चाइना', 'रॉ', और आयान मुखर्जी की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' में जूनून के नेगेटिव किरदार में नजर आईं, जिसने उन्हें एक अलग पहचान दी।



अभिनय की बारीकियां सीखने में सीनियर्स ने काफी मदद की

हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'लास्ट मैन इन टावर' को मिल रही अच्छी प्रतिक्रिया के बीच अभिनेत्री दिव्या दत्ता ने अभिनय के तकनीकी पहलुओं के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि करियर के शुरुआती दिनों में अभिनय की तकनीकी बारीकियां सीखने में उनके सीनियर्स ने उनकी काफी मदद की थी। फिल्म के प्रमोशन के दौरान दिव्या दत्ता ने अपने को-एक्टर मनोज बाजपेयी और निर्देशक बेन रेखी के साथ मुंबई में आईएएनएस से बातचीत की। दिव्या दत्ता ने आईएएनएस से कहा, ''सबसे पहले, जहां तक मेरे लिए तकनीकी पहलुओं की बात है, अगर मुझे अपनी बुनियादी चीजें पता हैं, मैं अपना डायलॉग ठीक से बोल रही हूं और वह स्क्रीन पर सही तरीके से नजर आ रहा है, तो मेरे लिए इतना काफी है। एक समय ऐसा भी था, जब मुझे इन चीजों की जानकारी नहीं थी। मैं अपना सर्वश्रेष्ठ कर रही थी, लेकिन स्क्रीन पर सही तरीके से नजर नहीं आ रही थी। उस समय मेरे सीनियर्स ने मेरा हाथ थामा और मुझसे कहा, 'सुनो, तुम अच्छा कर रही हो, लेकिन स्क्रीन पर सही तरीके से नजर नहीं आ रही हो।' इस मामले में मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं।''

उन्होंने आगे कहा, ''समय के साथ आप ये चीजें सीखते हैं। वे यह भी कहते हैं कि पहले अपनी लाइनें अच्छे से तैयार कर लो, तकनीकी चीजों को समझ लो और उसके बाद बस उस पल में पूरी तरह शामिल हो जाओ। उस पल का जादू अपने आप होने दो। अगर मैं अपने को-एक्टर की आंखों में देख रही हूं, तो शायद हर टेक अलग होगा। हर टेक में जब मैं उनकी आंखों में देखूंगी तो उससे एक अलग भावना पैदा हो सकती है।''

दिव्या ने आगे कहा, ''वह भावना कभी ऊपर जा सकती है और कभी नीचे। कई बार यह आपको हैरान भी कर देती है। इसलिए आपको उसे स्वाभाविक रूप से होने देना चाहिए। अगर आप बहुत ज्यादा बंध जाते हैं और सोचते हैं कि 'नहीं, नहीं, यही सीमा है और मुझे इसी नोट पर परफॉर्म करना है', तो आपका अभिनय बहुत सीमित हो जाता है। आपको बस अपने अभिनय को स्वाभाविक रूप से बहने देना चाहिए।'' इस बीच, 'लास्ट मैन इन टावर' अरविंद अडिगा के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित है। फिल्म की कहानी तेजी से बदलते मुंबई की पृष्ठभूमि पर आधारित है। फिल्म में मनोज बाजपेयी एक रिटायर्ड स्कूल टीचर और विधुर की भूमिका निभा रहे हैं, जो एक पुरानी अपार्टमेंट बिल्डिंग में रहते हैं। जब एक अमीर डेवलपर वहां के निवासियों को इमारत बेचने के बदले बड़ी रकम की पेशकश करता है, ताकि उसकी जगह एक लग्जरी टावर बनाया जा सके, तो ज्यादातर लोग पैसे के लालच में इस प्रस्ताव के लिए तैयार हो जाते हैं। हालांकि, मनोज बाजपेयी का किरदार वहां से जाने से इनकार कर देता है और इस तरह वह पुनर्विकास योजना के रास्ते में अकेली बड़ी बाधा बन जाता है। फिल्म 'लास्ट मैन इन टावर' फिलहाल सिनेमाघरों में चल रही है।

अभिनय छोड़ने वाली थीं अंजलि आनंद, फिर ऐसे मिली करण जौहर की फिल्म

फिल्ममेकर और कोरियोग्राफर फराह खान अक्सर जानी-मानी हस्तियों के घर जाती हैं और वहां से व्लॉग बनाकर उन्हें यूट्यूब पर शेयर करती हैं। अब हाल ही में फराह अभिनेत्री अंजलि आनंद के मुंबई स्थित घर पहुंचीं। इस दौरान अंजलि ने फराह को अपने घर की झलक दिखाई। साथ ही बातों ही बातों में यह भी बताया कि कैसे उन्हें अपनी डेब्यू फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' मिली। फराह से बात करते हुए अभिनेत्री ने कहा, '2020 मेरी जिंदगी का सबसे मुश्किल दौर था। मैं सोच रही थी कि मैं इंडिया से बाहर चली जाउंगी। अब मुझे एक्टिंग नहीं करनी। कुछ मिल नहीं रहा था, क्योंकि लॉकडाउन हो गया था। लॉकडाउन में सारे पैसे खत्म हो गए थे, क्योंकि उस समय किराए पर अकेले रहती थी। तो सब खत्म हो गया था, तब छह महीने में जितनी सेविंग्स थी सब खत्म हो गई थी।'

अंजलि आनंद ने आगे बताया, 'फिर मेरे दोस्त मुझे गोवा लेकर गए। वहां मुझे कास्टिंग डायरेक्टर शानू शर्मा का मैसेज आया। 'शानू ने मुझे बताया कि करण ने तुम्हारी फोटो देखी और उन्हें पसंद आई। वो फिल्म के इस पार्ट के लिए एक्टर देख रहे हैं। अगर तुम ऑडिशन पार कर लो, तो वह तुम्हें ले लेंगे।' अंजलि ने बताया कि करण जौहर उनकी तस्वीरों और ऑडिशन से प्रभावित हुए थे।



संजय मिश्रा ने थामी कलम; सिनेमा के अनुभवों को दिया किताब का रूप



चर्चित अभिनेता संजय मिश्रा ने अपनी अदाकारी से दर्शकों के बीच अच्छी जगह बनाई है। सपोर्टिंग भूमिकाओं के जरिए भी उन्होंने खूब नाम कमाया है। हाल ही में उन्हें 'भक्षक' में अपने किरदार के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस बीच अभिनेता ने अपनी किताब का एलान किया है। अभिनेता संजय मिश्रा ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए अपनी किताब को लेकर जानकारी दी है। यह दरअसल, अभिनेता की आत्मकथा होगी। इस आगामी ऑटोबायोग्राफी में वे अपनी जिंदगी और करियर से जुड़ी अनकही कहानियों, संघर्षों, अनुभवों और सीखों को साझा करेंगे। किताब का नाम 'हम सीखते-सीखते रह गए' है। संजय मिश्रा की यह किताब नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला में लॉन्च होगी, जिसका आयोजन जनवरी 2027 में होगा। संजय मिश्रा ने यह किताब अपने दिवंगत पिता शंभू नाथ मिश्रा को समर्पित की है।



हॉरर थ्रिलर प्रोजेक्ट से जुड़े अजय देवगन, नए शीर्षक का हुआ एलान

अजय देवगन की अपकमिंग हॉरर थ्रिलर फिल्म का आधिकारिक टाइटल सामने आया है। इस फिल्म के निर्देशक रोहित जुगराज हैं। पहले इस प्रोजेक्ट को 'गृह प्रवेश' के नाम से जाना जा रहा था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अब इस फिल्म का नाम 'सूर्य प्रकाश' रखा गया है।

किससे प्रेरित है कहानी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यह सुपरनैचुरल थ्रिलर एक रहस्यमयी और नैतिक रूप से जटिल दुनिया को दिखाएगी, जिसमें देवगन एक ऐसा किरदार निभाएंगे जो उनकी हालिया फिल्मों के किरदारों से बिल्कुल अलग होगा। कहा जाता है कि इसकी कहानी गरुड़ पुराण से प्रेरित है, जो एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ है। यह ग्रंथ पारंपरिक रूप से भगवान विष्णु और पक्षियों के राजा गरुड़ के बीच बातचीत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। 'सूर्य प्रकाश' टाइटल इस कहानी में रहस्य और रोमांच की एक और परत जोड़ता है, जिसमें हॉरर, मिस्ट्री और सस्पेंस का मिश्रण होने की उम्मीद है। फिल्म का प्रोडक्शन दो सितंबर को शुरू हुआ और इसके नवंबर तक चलने की उम्मीद है। खबरों के मुताबिक, मेकर्स इसे 2027 की दूसरी छमाही में सिनेमाघरों में रिलीज करने का लक्ष्य बना रहे हैं। इस फिल्म को पैनोरमा स्टूडियोज के कुमार मंगत और अभिषेक पाठक, देवगन फिल्म्स के साथ मिलकर प्रोड्यूस कर रहे हैं।

रोहित जुगराज का हॉरर जॉनर से नाता

'सूर्य प्रकाश' के निर्देशक रोहित जुगराज का हॉरर जॉनर से पुराना नाता रहा है। उन्होंने 2003 में अजय देवगन की फिल्म 'भूत' में राम गोपाल वर्मा के असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर अपना करियर शुरू किया था। इसके बाद जुगराज ने 'सरदारजी' फिल्में डायरेक्ट कीं और 'ये काली काली आंखें' और 'चमक' जैसे स्ट्रीमिंग प्रोजेक्ट्स पर भी काम किया। 'सूर्या प्रकाश' पर देवगन के साथ उनका काम सुपरनैचुरल जॉनर में एक और कोशिश है, जो इस बार एक मिस्ट्री-बेस्ड कहानी के जरिए सामने आएगी।

अजय देवगन का वर्कफ्रंट

अजय देवगन जल्द ही रोहित शेट्टी की 'गोलमाल 5' में भी नजर आएंगे। यह फिल्म 'गोलमाल' सीरीज की पांचवीं फिल्म है। खास बात यह है कि इस फिल्म से अक्षय कुमार भी जुड़े हैं। बताया जाता है कि वह इस फिल्म में विलेन का किरदार करेंगे। अजय देवगन 'दृश्यम: द कन्क्लूजन' की तैयारी कर रहे हैं, जो इस पॉपुलर थ्रिलर फ्रैंचाइजी का अगला चैप्टर है। यह दो अक्तूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

'1920 : कोल्ड विंटर' से डरावनी फिल्मों की दुनिया में कदम रखने जा रहे हैं आन्या सिंह और अहान शेट्टी



फिल्मकार विक्रम भट्ट अपनी चर्चित डरावनी फिल्म सीरीज '1920' की अगली कड़ी लेकर आ रहे हैं। इस फिल्म का नाम '1920 : कोल्ड विंटर' बताया जा रहा है। फिल्म में अहान शेट्टी के साथ आन्या सिंह भी नजर आएंगी। अन्या के लिए यह फिल्म इसलिए भी खास है, क्योंकि वह पहली बार डरावनी फिल्मों की दुनिया में कदम रखने जा रही हैं। वहीं अहान शेट्टी भी पहली बार किसी अलौकिक डरावनी फिल्म में काम करते दिखाई देंगे। '1920 : कोल्ड विंटर' को विक्रम भट्ट की '1920' सीरीज की छठी फिल्म बताया जा रहा है।



अपने घर को खूबसूरत बनाने का एक बेहतरीन तरीका है इनडोर प्लांटिंग

आज के समय में अधिकतर लोग प्लांटिंग करना काफी पसंद करते हैं। भले ही स्पेस कम हो, लेकिन फिर भी वे इनडोर प्लांटिंग करते हैं। यह अपने घर को बेहद ही खूबसूरत बनाने का एक बेहतरीन तरीका है। लेकिन जरा सोचिए कि आप अपने घर के अंदर प्लांट्स लगाएं और वे कुछ ही दिनों में मुरझा जाएं या फिर उनकी ग्रोथ ही ना हो, तो यकीनन आपको काफी निराशा होगी। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि कई इनडोर प्लांट्स के लिए मिट्टी चुनते समय हम उतना ध्यान नहीं देते हैं। पौधे के पोषक तत्व मिट्टी से ही मिलती है। अमूमन इनडोर प्लांटिंग के लिए हमें पॉटिंग मिक्स भी तैयार करना होता है। चूंकि आपके आसपास कई तरह की मिट्टी होती है तो आपको पहले अपने पौधे और उसकी जरूरतों को समझना होता है और फिर उसी के अनुसार मिट्टी का चयन करना होता है।

पॉटिंग मिक्स का करें चयन

इनडोर प्लांटिंग के लिए पॉटिंग मिक्स सबसे अच्छे माने जाते हैं। इनमें कार्इ, वर्मीक्यूलाइट और पेर्लाइट आदि का एक सही मिश्रण होता है। ऐसे में जब इनका इस्तेमाल इनडोर प्लांट्स के लिए किया जाता है तो उसे सभी आवश्यक पोषक तत्व आसानी से मिल जाते हैं। इतना ही नहीं, इनका ड्रेनेज सिस्टम भी काफी अच्छा होता है। जिसके कारण प्लांट्स में रूट रॉट या ओवरवाटरिंग की समस्या नहीं होती है।

पोषक तत्वों पर दें ध्यान

जब आप इनडोर प्लांट्स के लिए मिट्टी चुनते हैं तो आपको यह अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए कि उस मिट्टी या पॉटिंग मिक्स में पर्याप्त पोषक तत्व हों। चूंकि इनडोर प्लांट्स बाहरी पौधों की तरह प्राकृतिक वातावरण से पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं और इसलिए वे मिट्टी में मौजूद पोषक तत्वों पर निर्भर होते हैं।

चेक करें पीएच लेवल

मिट्टी के पीएच लेवल का सीधा असर प्लांट की ग्रोथ पर पड़ता है। हर प्लांट की जरूरतें अलग होती हैं। हालांकि, अधिकतर इनडोर प्लांट्स थोड़ा सा एसिडिक से न्यूट्रल पीएच रेंज पसंद करते हैं। इसलिए, जब भी आप इनडोर प्लांट्स के लिए मिट्टी चुनें, तो यह देखें कि वह आपके प्लांट्स की जरूरतों को पूरा करता हो।

कंटेनर साइज का भी रखें ध्यान

जब आप इनडोर प्लांटिंग के लिए मिट्टी को चुन रहे हैं तो आपको कंटेनर के साइज का भी ख्याल रखना चाहिए। मसलन, प्लांटिंग के लिए पॉट साइज छोटा है तो आपको लाइट मिक्स का इस्तेमाल करना चाहिए, जिससे ओवर वाटरिंग की समस्या ना हो। वहीं अगर पॉट साइज बड़ा है तो ऐसे में आपको ऐसी मिट्टी चुननी चाहिए, जिसमें एयरेशन या ड्रेनेज को लेकर समस्या ना हो।

स्टेरलाइज मिक्स का करें इस्तेमाल

कुछ इनडोर प्लांट्स कीटों और बीमारियों के प्रति अधिक सेंसेटिव होते हैं। ऐसे में आपको उनके लिए स्टेरलाइज पॉटिंग मिक्स का ही इस्तेमाल करना चाहिए। जिससे पौधों में रोगजनकों के प्रवेश के जोखिम को कम करने में काफी हद तक मदद मिल सकती है।

गार्डन की मिट्टी ना करें इस्तेमाल

जब भी आप इनडोर प्लांटिंग कर रहे हैं तो आपको इस बात का खास ख्याल रखना चाहिए कि आप गार्डन की मिट्टी का इस्तेमाल ना करें। गार्डन की मिट्टी थोड़ी अलग होती है और यह कॉम्पैक्ट हो सकती है। जिससे मिट्टी में एयरेशन और ड्रेनेज की समस्या हो सकती है। इससे पौधा मर भी सकता है।



कहीं आप भी तो नहीं हैं लो कॉन्फिडेंस की शिकार?

कॉन्फिडेंस कम होने के कारण जीवन के हर पड़ाव पर मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में जरूरी है कि अपनी कमजोरी को दूर कर आप अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने पर फोकस करें।

आत्मविश्वास जीवन में सफलता की कुंजी है। हालांकि कई बार परिस्थितियां व्यक्ति को आत्मविश्वास में कमी का शिकार बना देती हैं। धीरे-धीरे व्यक्ति पूरी तरह से अपना आत्मविश्वास खो देता है। कई बार व्यक्ति को खुद यह अंदाजा नहीं होता है कि उसमें असल में आत्मविश्वास की कमी है। कुछ संकेतों से यह समझा जा सकता है कि किसी में आत्मविश्वास की कमी तो नहीं। साथ ही कुछ बातों का ध्यान रखकर आत्मविश्वास को वापस भी पाया जा सकता है। तो चलिए इसी के साथ आर्टेमिस अस्पताल के मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार विज्ञान के प्रमुख मनोचिकित्सक व सलाहकार डॉ. राहुल चंडोक से जानते हैं आत्मविश्वास बढ़ाने के आसान तरीके।

आत्मविश्वास में कमी के ये हैं लक्षण?

अगर आप निर्णय लेने में घबराते हैं, हमेशा दूसरों से नकारात्मक रूप में अपनी तुलना करते हैं, किसी से मदद लेने में संकोच करते हैं, अपने बारे में नकारात्मक बातें बोलते हैं और विफलता का डर आपको घेरे रहता है, तो आपमें आत्मविश्वास की कमी है। अगर खुद में ऐसी आदतें पनपती नजर आएं तो सतर्क हो जाएं और ऐसे कदम उठाएं जिनसे आपका आत्मविश्वास लौट आए। अपनी तारीफ को स्वीकार नहीं कर पाना, भविष्य को लेकर शंका में घिरे रहना और हमेशा लोगों को खुश करने की कोशिश में लगे रहना भी इसी का लक्षण है।

खुद को जानें

आत्मविश्वास की ओर बढ़ने की पहली सीढ़ी है खुद को समझना। अपने बारे में आने वाले नकारात्मक विचारों को मन से हटाइए और सकारात्मक बातें सोचिए। अगर कोई बात पसंद न आए तो सामने वाले को न कहना सीखिए। दूसरों से अपनी तुलना बंद कीजिए और कुछ ऐसा कीजिए जो आपको पसंद हो। हमेशा दूसरों की पसंद खुद पर हावी मत होने दीजिए।

अच्छी बातों का जश्न मनाइए

कभी-कभी हम अपने बारे में इतने नकारात्मक हो जाते हैं कि अच्छी बातों पर भी खुशी नहीं मना पाते हैं। ऐसा मत कीजिए। अगर कुछ अच्छा हो तो उसका जश्न मनाइए। अगर आपने कुछ अच्छा किया है और कोई आपकी तारीफ कर रहा है, तो उसे स्वीकारिए। अपने बारे में उन बातों की सूची बनाइए, जो आपको पसंद हैं। अगर आप लोगों के मुंह से बुराइयां सुनकर दिल से लगा लेते हैं, तो अच्छाइयों को भी स्वीकारना सीखिए।

भरोसेमंद लोगों का नेटवर्क बनाइए

जीवन में कुछ ऐसे लोगों का साथ जरूरी है, जिनके साथ आपको अच्छा अनुभव होता हो। मन में कोई बात हो तो किसी भरोसेमंद व्यक्ति से साझा कीजिए। अपना कोई दुख ऐसे व्यक्ति से ही साझा कीजिए, जिस पर भरोसा हो। उन लोगों से बात कीजिए, जिनसे बात करके सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है।

खुद को चुनौती दीजिए

आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए जरूरी है कि खुद को चुनौतियां दीजिए और फिर उन चुनौतियों को पूरा करने के बाद खुद को पुरस्कृत कीजिए। जब हम कोई चुनौती पूरी करते हैं, तो हमारा मन अपनी क्षमता को स्वीकारने के लिए प्रेरित होता है। एक बात ध्यान रहे, शुरुआत में अपने समक्ष छोटे-छोटे लक्ष्य रखिए। इससे लक्ष्य को पाना आसान होता है और एक के बाद एक लक्ष्य पाते रहने से आत्मविश्वास भी बढ़ता जाता है।



अपना ध्यान रखिए

हम किसी से भी मिलते हैं तो उसे अपना ध्यान रखने की हिदायत जरूर देते हैं। लेकिन आश्चर्य की बात है कि हम खुद को कभी अपना ध्यान रखने के लिए नहीं कह पाते हैं। यह सही नहीं है। अपना ध्यान रखना सीखिए। शारीरिक या मानसिक किसी भी प्रकार की परेशानी लगे, तो उसकी अनदेखी मत कीजिए। जरूरत हो तो डॉक्टर से संपर्क कीजिए। खुद पर आपका भरोसा ही आपको आत्मविश्वास से भरपूर बनाएगा।



बचपन में ही सिखाएं बच्चे को सोशल स्किल्स

बच्चों को बचपन में काफी सारी बातें सिखाई जाती है। फिर चाहें वो खुद खाना खाने की बात हो या फिर उन्हें किसी बात को लेकर समझाने की। बच्चों को एक बार जो सिखा दिया जाता है, उसके बाद उन चीजों में बदलाव करना मुश्किल होता है, क्योंकि बच्चे इस बात को समझने के लिए तैयार नहीं होते की जो पहले सिखाया वो सही है या जो बाद में उसे सिखाया जा रहा है वह सही है। ऐसे में अगर आप बच्चे के साथ स्ट्रॉन्ग रिलेशन शेयर करना चाहते हैं तो आपको बचपन में ही बच्चे को सोशल स्किल्स सिखाने की जरूरत है। जानें 5 जरूरी स्किल्स, जो हर किसी को अपने बच्चे को कम उम्र में ही सिखाना चाहिए।

चीजें बांटना (शेयर करना)

बचपन से सिखाना चाहिए कि 'शेयरिंग इज केयरिंग' यानि दूसरों के साथ बांटना देखभाल करने जैसा है। अपने बच्चों को शेयर करने के महत्व को बताने से स्ट्रॉन्ग रिलेशन बनाने में मदद मिल सकती है। शेयर करना बच्चों को समझौता और निष्पक्षता सिखाता है। इससे उन्हें यह सीखने में मदद मिलती है कि अगर वे दूसरों को थोड़ा देते हैं, तो बदले में उन्हें भी कुछ मिल सकता है। अध्ययनों से पता चलता है कि दो वर्ष से कम उम्र के बच्चे केवल तभी शेयर करने की इच्छा दिखाते हैं जब उनके पास बहुत ज्यादा मात्रा में चीजें हों, तीन से छह साल की उम्र के बीच, वे थोड़े स्वार्थी होते हैं। सात या आठ साल की उम्र तक, बच्चे निष्पक्षता के बारे में अधिक परेशान हो जाते हैं और दूसरों के साथ शेयर करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

सुनना

सुनना एक और सोशल स्किल है, जिसमें ज्यादातर लोगों की कमी होती है, जिसमें बड़े भी शामिल हैं। सुनने का अर्थ यह नहीं है कि जब दूसरा बोल रहा हो तो चुप रहना, बल्कि समझना कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं। जैसे बातचीत में बात करना और अपनी बात सामने रखना जरूरी है, वैसे ही सुनना भी जरूरी है। यह बच्चों को अकेडमिक्स में भी मदद करता है।

को-ऑपरेटिंग

सहयोग का मतलब आम तौर पर एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दूसरे व्यक्ति के साथ अच्छे ढंग से काम करना होता है। स्किल्स में महारत हासिल करने से दूसरे व्यक्ति और समुदाय के साथ जुड़ने में मदद मिलती है। एक-दूसरे का सहयोग करने से बच्चों को दूसरों से सम्मान भी मिलता है। किसी भी लक्ष्य को आधा पूरा करने से उन्हें दूसरे लोगों की भावनाओं और विचारों को स्वीकार करना सीखने में मदद मिलेगी।

पर्सनल स्पेस की रिस्पेक्ट

हर रिश्ते की शारीरिक और भावनात्मक सीमाएं होती हैं। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में अलग होता है, और हमें सभी का सम्मान करना चाहिए। कई बार मिलनसार होते हुए भी ज्यादातर लोग हदें पार कर जाते हैं। मिलनसार होना और दूसरों के पर्सनल स्पेस का सम्मान करना दो अलग-अलग चीजें हैं और दोनों के बारे में पता होना चाहिए। अपने बच्चे को सिखाएं कि कैसे परमिशन मांगें और बाउंडरी की पहचान करें।

मैनर्स

अच्छे मैनर्स सिखाना भी सोशल स्किल्स का एक हिस्सा है। थैंक यू, सॉरी का सही इस्तेमाल और टेबल तरीके का इस्तेमाल करने का एक अच्छा तरीका आपकी काफी मदद कर सकता है। ये स्किल स्कूल में पढ़ाए जाते हैं, लेकिन आपको भी इसकी प्रैक्टिस बच्चों से करवाते रहना चाहिए।



सोशल मीडिया पर ऐसे ऐसे पहचानें फेक प्रोफाइल

सोशल मीडिया पर अक्सर अनजान प्रोफाइल से फ्रेंड, फॉलो और मैसेज रिक्वेस्ट आती रहती हैं। कई बार अनजान द्वारा भेजी गई रिक्वेस्ट भी हम स्वीकार कर लेते हैं, लेकिन सावधान! यहां ऐसी कई प्रोफाइल हैं जो असली नहीं हैं। ये वो अकाउंट्स हैं जिन्हें धोखाधड़ी के लिए ही बनाया गया है। ठग फेक आईडी बनाकर लोगों से जुड़ते हैं, उनकी गतिविधियों पर नज़र रखकर अपना शिकार बनाते हैं। ऐसे में कौन-सी प्रोफाइल असली हैं और कौन-सी नहीं, यह जानकारी आवश्यक बन जाती है।

क्या करते हैं ठग?

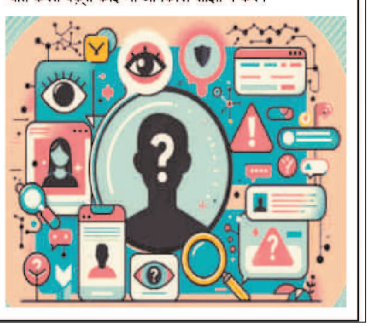
पहले ठग फेक प्रोफाइल से रिक्वेस्ट भेजते हैं, स्वीकार होने पर व्यक्ति की गतिविधियों पर नज़र रखते हुए जानकारी चुराते हैं। मैसेज के ज़रिए ठगने की कोशिश कर सकते हैं। आईडी हैक कर सकते हैं या बैंक खाता खाली कर सकते हैं।

ऐसे पहचानें...

- फेक अकाउंट में तस्वीर किसी अन्य व्यक्ति की होती है, लेकिन व्यक्ति की जानकारी नहीं होती। कुछ मामलों में जानकारी और विवरण किसी और का हो सकता है। ये बड़ी संख्या में फॉलो करेंगे, लेकिन इनके फॉलोअर्स कम या शून्य होंगे। पोस्ट भी शून्य रहेगी। ऐसा भी हो सकता है कि प्रोफाइल पिक्चर भी न हो।
- गूगल इमेज सर्च टूल से प्रोफाइल पर लगी तस्वीर को स्कैन करें। अगर प्रोफाइल फोटो नकली होगी तो इसके ज़रिए पता चल जाएगा कि तस्वीर कहां से ली गई है।
- मैसेज पर बातचीत के दौरान व्यक्ति लालच दे सकता है, जैसे क्या आप घर बैठे पैसे कमाना चाहते हैं? वह कोई लिंक भी भेज सकता है। ऐसे में सावधान हो जाएं।
- बातचीत के दौरान व्यक्ति कुछ असामान्य बातें कर सकता है, जैसे कि आप मुझे बहुत पसंद हैं, क्या आप मुझसे कल मिल सकते/सकती हो? वो किसी अन्य व्यक्ति की तस्वीर भेजकर भी आपको अपनी तस्वीर भेजने का आग्रह कर सकता है।

बचाव जरूरी है

ऐसी फेक प्रोफाइल को फ्रेंड और फॉलोअर्स की सूची से हटा दें। सूची से हटाने के बाद प्रोफाइल की रिपोर्ट करके ब्लॉक कर दें। बात करते वक़्त कोई भी जानकारी साझा न करें।



मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना से पूरी हो रही तीर्थयात्रा की अभिलाषा, जिले के 21 तीर्थयात्री रवाना

जिला पंचायत उपाध्यक्ष विक्रांत सिंह ने दिखाई हरी झंडी, सुखद और मंगलमय यात्रा की दी शुभकामनाएं

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़



मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले के 21 तीर्थयात्रियों का जत्था मंगलवार को कलेक्ट्रेट परिसर से रवाना हुआ। जिला पंचायत उपाध्यक्ष विक्रांत सिंह ने हरी झंडी दिखाकर दल को रवाना किया और यात्रियों की सुखद एवं मंगलमय यात्रा की कामना की। छत्तीसगढ़ शासन के निर्देशानुसार चयनित ये तीर्थयात्री स्वर्ण मंदिर एवं माता वैष्णो देवी मंदिर के दर्शन करेंगे। यात्रा के दौरान दल वाघा बॉर्डर का भी भ्रमण करेगा। रवानगी से पूर्व कलेक्ट्रेट परिसर में अतिथियों ने तीर्थयात्रियों का पुष्पमाला पहनाकर आत्मीय स्वागत किया और शुभकामनाएं दीं। समाज कल्याण विभाग द्वारा यात्रियों के लिए स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई थी। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना वरिष्ठ एवं पात्र नागरिकों की आस्था का सम्मान करते हुए उन्हें धार्मिक स्थलों के दर्शन का अवसर उपलब्ध करा रही है। योजना से उनकी तीर्थयात्रा की अभिलाषा साकार हो रही है।

इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती गिरजा चंद्राकर, जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधि शैलेन्द्र त्रिपाठी, जनपद उपाध्यक्ष लखन साहू, जनपद सदस्य शैलेन्द्र मिश्रा, बिशेसर साहू, विकेश गुप्ता, नंदकुमार चंद्राकर एवं सहायक संचालक समाज कल्याण कमलेश कुमार पटेल सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने स्वास्थ्य संस्थाओं में सुरक्षित, सुलभ व गुणवत्तापूर्ण सेवाएं सुनिश्चित करने के निर्देश

कलेक्टर इंद्रजीत सिंह चंद्रावल की अध्यक्षता में जिला गुणवत्ता आश्वासन समिति की बैठक आयोजित की गई। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अनिल कुमार शुक्ल के निर्देशन तथा सिविल सर्जन डॉ. आशीष शर्मा की उपस्थिति में आयोजित बैठक में परिवार नियोजन सेवाओं एवं जिले की स्वास्थ्य संस्थाओं में गुणवत्ता सुधार गतिविधियों की समीक्षा की गई। बैठक में परिवार नियोजन क्षतिपूर्ति योजना के अंतर्गत परिवार नियोजन सेवा की असफलता से संबंधित एक प्रकरण पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। प्रकरण के तथ्यों, आवश्यक दस्तावेजों एवं निर्धारित प्रक्रियाओं का अवलोकन कर सुधारात्मक दिशा-निर्देश दिए गए। परिवार नियोजन सेवाओं में निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन, लाभार्थियों को उचित परामर्श, आवश्यक सावधानियां बरतने तथा प्रकरणों की समयबद्ध रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया गया। कलेक्टर श्री चंद्रावल ने स्वास्थ्य सेवाओं में गुणवत्ता, सुरक्षा एवं जवाबदेही को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वास्थ्य संस्थाओं में नियमित आंतरिक मूल्यांकन, कमियों की पहचान एवं समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करने को कहा। बैठक में राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक एवं अन्य गुणवत्ता सुधार कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन की तैयारियों पर भी चर्चा हुई।

खास खबर

उप मुख्यमंत्री शर्मा ने खण्डसरा में किया नवीन ग्राम पंचायत भवन का लोकार्पण

नई दृष्टिबिंदु / कवर्धा



जिले के बोड़ला विकासखंड अंतर्गत ग्राम खण्डसरा में उप मुख्यमंत्री एवं कवर्धा विधायक विजय शर्मा तथा सांसद संतोष पांडेय ने 20 लाख रुपए की लागत से बने नवीन ग्राम पंचायत भवन का लोकार्पण किया। नवीन पंचायत भवन के शुभारंभ से ग्राम पंचायत के प्रशासनिक कार्यों के संचालन और ग्रामीणों को स्थानीय स्तर पर शासकीय सेवाएं उपलब्ध कराने में सुविधा होगी। कार्यक्रम के दौरान उप मुख्यमंत्री शर्मा ने ग्रामीणों के बीच जमीन पर बैठकर उनकी समस्याएं और मांगें सुनीं। ग्रामीणों ने भी खुलकर अपनी बातें उप मुख्यमंत्री के समक्ष रखीं। शर्मा ने एक-एक कर ग्रामीणों की समस्याओं की जानकारी ली और उनके निराकरण के लिए मौके पर ही आवश्यक पहल की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए।

गांव की चौपाल में दिखा जनसेवा का भाव : उप मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों से आत्मीय संवाद करते हुए कहा कि नवीन पंचायत भवन के निर्माण से पंचायत के कार्यों को बेहतर ढंग से संचालित करने के साथ ही ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान और जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि शासन की प्राथमिकता है कि गांव के अंतिम व्यक्ति तक विकास योजनाओं का लाभ पहुंचे और नागरिकों को अपनी छोटी-छोटी समस्याओं के समाधान के लिए अनावश्यक परेशान न होना पड़े। जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों का दायित्व है कि वे जनता के बीच पहुंचकर उनकी समस्याओं को समझें और उनका समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करें।

नवीन पंचायत भवन से ग्रामीणों को मिलेगी बेहतर सुविधाएं: नवीन ग्राम पंचायत भवन के लोकार्पण से ग्राम खण्डसरा में पंचायत संबंधी कार्यों के लिए बेहतर आधारभूत सुविधा उपलब्ध हुई है। यहां ग्राम पंचायत की बैठकों, विकास कार्यों की समीक्षा, शासकीय योजनाओं की जानकारी तथा ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान के लिए उपयुक्त स्थान मिलेगा। इससे पंचायत स्तर पर प्रशासनिक कार्यों में सुगमता और ग्रामीणों की भागीदारी बढ़ाने में मदद मिलेगी।

ग्राम ढाबा में वित्तीय समावेशन संतृप्ति अभियान के तहत विशेष जागरूकता शिविर आयोजित

राजनांदगांव। छत्तीसगढ़ ग्रामीण बैंक शाखा तुमड़ीबोड़ (क्षेत्रीय कार्यालय राजनांदगांव) द्वारा डोंगरगांव विकासखंड के ग्राम ढाबा स्थित पंचायत परिसर में वित्तीय समावेशन संतृप्ति अभियान के अंतर्गत एक विशेष जागरूकता एवं जनभागीदारी शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की पहुंच को बढ़ाना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक रायपुर के डीजीएम प्रदीप गोंधुले उपस्थित थे। शिविर में 100 से अधिक ग्रामीणों एवं हितग्राहियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान अतिथियों और बैंक अधिकारियों ने ग्रामीणों को वित्तीय रूप से सशक्त बनाने और सुरक्षित लेनदेन के तौर-तरीकों की विस्तार से जानकारी दी।

शिविर के दौरान ग्रामीणों को विभिन्न शासकीय और बैंकिंग योजनाओं से अवगत कराया गया, जिनमें प्रमुख हैं। **सामाजिक सुरक्षा योजनाएं:** प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और अटल पेंशन योजना। **केवाईसी और नामांकन:** रे-केवाईसी, सीकेवाईसी तथा बैंक खातों में नॉमिनेशन (नामांकन) की आवश्यकता और इसके महत्व पर जोर दिया गया। **साइबर सुरक्षा:** मनी म्यूल और डिजिटल फ्रॉड से बचाव के लिए साइबर वित्तीय जागरूकता संबंधी दिशा-निर्देश दिए गए। अधिकारियों ने ग्रामीणों से बैंकिंग सेवाओं से अधिक से अधिक जुड़ने, अपने बैंक खातों की केवाईसी अपडेट रखने और सुरक्षित डिजिटल लेनदेन अपनाने का आह्वान किया। आयोजन के दौरान छत्तीसगढ़ ग्रामीण बैंक क्षेत्रीय कार्यालय राजनांदगांव के क्षेत्रीय प्रबंधक आशीष सिंह, एफआई मैनेजर अरविंद द्विवेदी एवं अनिल रजक, तुमड़ीबोड़ शाखा प्रबंधक अमित कुमार, अधिकारी मयंक कुमार, ग्राम पंचायत के सरपंच, सचिव, अन्य जनप्रतिनिधि तथा बैंककर्मी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

गोवर्धन पूजा पर उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कवर्धा में विभिन्न कार्यक्रमों में हुए शामिल

गौरा-गौरी के किए दर्शन व पूजन, नागरिकों को दी दीपावली और गोवर्धन पूजा की शुभकामनाएं



नई दृष्टिबिंदु / कवर्धा

उप मुख्यमंत्री एवं कवर्धा विधायक विजय शर्मा गोवर्धन पूजा के अवसर पर कबीरधाम जिले के कवर्धा नगर में आयोजित विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल हुए। उन्होंने सबसे पहले विंध्यवासिनी वार्ड क्रमांक 27 स्थित रेवाबांध तालाब पहुंचकर गौरा-गौरी के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। इस दौरान उनका अलग अंदाज देखने को मिला और गौरा-गौरी बारात को देखकर वे खुद भी बारात में शामिल हुए और भक्ति गीतों को गाकर जयकारे लगाए। इसके बाद वे मठपारा पहुंचे, जहां उन्होंने गौरा-गौरी का पूजन किया।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कवर्धा स्थित अपने निवास में सपरिवार गोवर्धन पूजा की और गौ माता को प्रसाद खिलाया। इस अवसर पर निवास पर उनसे मिलने पहुंचे नागरिकों से उन्होंने आत्मीय मुलाकात की और सभी को दीपावली एवं गोवर्धन पूजा की बधाई तथा शुभकामनाएं दीं।

इसके पश्चात उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कैलाशनगर और कमला क्लिनिक के पास दैहान में पहुंचे और वहां आयोजित गोवर्धन पूजा कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कैलाश नगर में भी गोवर्धन पूजा कार्यक्रम में शामिल होकर सभी के साथ पूरे भक्तिभाव से पूजा-अर्चना की और गायों को भोजन कराया। इस दौरान ग्रामीणों ने राउत नाचा शुरू किया तो कवर्धा विधायक श्री शर्मा स्वयं को नहीं रोक सके और सभी के साथ नाचा में शामिल होकर नाचते दिखाई दिए। सभी ने उनके साथ नाचा का आनंद लिया।



इन्द्रावतीपुर में खैरवार समाज के सामुदायिक भवन का भूमिपूजन



कृषि मंत्री रामविचार नेताम ने पूरा किया वादा

नई दृष्टिबिंदु / बलरामपुर

रामचंद्रपुर विकासखंड के चरकापथली-इन्द्रावतीपुर-सनावल में खैरवार, खेरवार, खरवार समाज की बहुप्रतीक्षित मांग पूरी हुई। प्रदेश के कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री रामविचार नेताम ने अपने वादे के अनुरूप 25 लाख रुपये की लागत से बनने वाले सामुदायिक भवन का विधि-विधान से भूमिपूजन किया। इस अवसर पर करमा महोत्सव एवं जनजातीय गौरव दिवस समारोह भी आयोजित हुआ, जिसमें मंत्री श्री नेताम अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा नेताम के साथ मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। समाज के प्रबुद्धजनों और ग्रामीणों ने भवन की सौगात के लिए मंत्री का आभार व्यक्त किया। यह भवन केवल खैरवार समाज तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि क्षेत्र के सभी वर्गों के लोग इसका उपयोग बैठकों, आयोजनों और सामाजिक कार्यों के लिए कर सकेंगे। इससे आपसी सद्भाव और भाईचारे को बल मिलेगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री श्री नेताम ने कहा कि किसी भी समाज की असली ताकत उसकी एकता और जागरूकता में होती है। उन्होंने समाज से संगठित होकर आगे बढ़ने और व्याप्त कुरीतियों को जड़ से समाप्त करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ परिवार से ही सशक्त समाज बनता है, इसलिए महिलाओं और बच्चों के पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाए। ग्रामीणों से उन्होंने अपील की कि बीमारी की स्थिति में नजदीकी प्राथमिक या सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुँचकर ही उपचार कराएँ, जहाँ शासन ने योग्य चिकित्सक और आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं। क्षेत्र के विकास पर उन्होंने बताया कि बुनियादी सुविधाओं का तेजी से विस्तार हो रहा है और बिजली, सड़क सहित अधोसंरचना के अनेक कार्य प्रगति पर हैं।

कार्यक्रम में खैरवार समाज के प्रदेश अध्यक्ष बुद्धदेव सिंह, राम किशुन सिंह, धर्मजीत सिंह, अंकुश सिंह सहित समाज के पदाधिकारी, कार्यपालन अभियंता ग्रामीण यांत्रिकी सेवा सच्चिदानंद कांत, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत रणवीर साय, वरिष्ठजन एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

धान खरीदी में अनियमितता और लापरवाही पर प्रशासन की कार्रवाई, आठ कम्प्यूटर ऑपरेटर सेवा से बर्खास्त

नई दृष्टिबिंदु / बालोद



जिले में धान खरीदी व्यवस्था को पारदर्शी, सुव्यवस्थित और जवाबदेह बनाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा लगातार निगरानी की जा रही है। इसी क्रम में खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 के दौरान धान खरीदी एवं परिदान के पश्चात निर्धारित मात्रा से अधिक धान की कमी पाए जाने तथा कार्य में लापरवाही एवं अनियमितता के मामलों में जिला प्रशासन ने कड़ी कार्रवाई की है।

कलेक्टर श्रीमती दिव्या उमेश मिश्रा के निर्देशानुसार सहकारिता विभाग द्वारा की गई कार्रवाई के तहत जिले की आठ आदिम जाति सेवा सहकारी समितियों के कम्प्यूटर ऑपरेटरों को सेवा से बर्खास्त करने के आदेश जारी किए गए हैं। इस कार्रवाई में नोडल अधिकारी सुरेंद्र प्रसाद वैद्य को भी सम्मिलित करते हुए धान खरीदी व्यवस्था की निगरानी एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया गया है।

जारी आदेश के अनुसार धान खरीदी एवं परिदान के बाद 2 प्रतिशत से अधिक धान की कमी पाए जाने पर संबंधित कम्प्यूटर ऑपरेटरों के विरुद्ध कार्रवाई की गई है। इनमें आदिम जाति सेवा सहकारी समिति मर्यादित हितेकसा, डौण्डी, कोटागांव, चिखलाकसा, आमाडुला, कुआंगोंदी, मंगलतराई एवं गुदुम के कम्प्यूटर ऑपरेटर शामिल हैं। जांच में धान खरीदी कार्य में लापरवाही एवं अनियमितता के कारण संबंधित समितियों को आर्थिक नुकसान होना पाया गया। इसके आधार पर प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति कर्मचारी सेवा नियम, 2018 के नियम क्रमांक 16.5(2) के तहत संबंधित कम्प्यूटर ऑपरेटरों को सेवा से बर्खास्त किया गया है।

कलेक्टर श्रीमती दिव्या उमेश मिश्रा के निर्देशानुसार जिले में धान खरीदी व्यवस्था को पारदर्शी एवं व्यवस्थित बनाए रखने के लिए संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। प्रशासन का उद्देश्य किसानों को धान विक्रय के दौरान किसी प्रकार की परेशानी न हो तथा उपार्जन केंद्रों में खरीदी से लेकर धान के परिदान तक प्रत्येक स्तर पर नियमों का पालन सुनिश्चित हो। जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि शासकीय कार्यों में लापरवाही, अनियमितता तथा आर्थिक नुकसान पहुंचाने वाले मामलों में नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी।

विकास कार्य

सड़क और पेयजल कार्यों को मिली प्रशासकीय स्वीकृति

डॉ. रमन सिंह की पहल पर राजनांदगांव जिले को मिली 17.72 करोड़ की सौगात

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

संस्कारधानी राजनांदगांव को दीपावली के पावन पर्व पर एक बड़ी सौगात मिली है। छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष एवं स्थानीय विधायक डॉ. रमन सिंह के दूरदर्शी प्रयासों से शहर में अधोसंरचना विकास के तीन महत्वपूर्ण कार्यों के लिए कुल 17 करोड़ 72 लाख 29 हजार रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्राप्त हुई है। इस उपलब्धि पर राजनांदगांव के महापौर मधुसूदन यादव ने इसे डॉ. रमन सिंह की ओर से शहर की जनता के लिए शानदार दीवाली का उपहार करार दिया है।

महापौर मधुसूदन यादव ने प्रेसवार्ता में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि वर्ष 2026-27 के बजट प्रावधान के तहत नगर निगम राजनांदगांव ने शहर के विकास के लिए कई प्रस्ताव शासन को भेजे थे। इन प्रस्तावों की स्वीकृति के लिए उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह से विशेष भेंट कर अनुरोध किया था। डॉ. रमन सिंह की



संवेदनशीलता और तत्परता के चलते राज्य शासन से इन लोकहितकारी कार्यों के लिए दिनांक 5 नवंबर 2026 को प्रशासकीय स्वीकृति आदेश जारी हो गए हैं। राज्य शासन के नगरीय प्रशासन विभाग से जारी आदेश के अनुसार, शहर में तीन प्रमुख विकास कार्य कराए जाएंगे।

रामकृष्ण नगर चौक से डोंगरगांव रोड सड़क निर्माण: इस कार्य के लिए 8 करोड़ 22 लाख 60 हजार रुपये की स्वीकृति मिली है।

बायपास कन्हारपुरी से तिरंगा चौक सड़क चौड़ीकरण: इस महत्वपूर्ण मार्ग के चौड़ीकरण कार्य हेतु 5 करोड़ 52 लाख 91 हजार रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

मोहारा जल संयंत्र गृह का मरम्मत कार्य: शहर के मोहारा स्थित 10 एवं 27 एमएलडी जल संयंत्र गृह के जीर्णोद्धार व मरम्मत के लिए 3 करोड़ 96 लाख 78 हजार रुपये की राशि मंजूर की गई है।

महापौर ने दावा किया है कि इन विकास कार्यों के पूरा होने से भविष्य में राजनांदगांव की जनता को सुगम व निर्बाध यातायात व्यवस्था का लाभ मिलेगा, वहीं मोहारा जल संयंत्र की मरम्मत से शहर में पेयजल आपूर्ति भी बेहद सुदृढ़ होगी। इस सौगात के लिए महापौर ने विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह के साथ-साथ प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव, प्रभारी मंत्री गजेंद्र यादव और राजनांदगांव सांसद संतोष पांडेय के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित किया है।

बाल विवाह मुक्त छत्तीसगढ़ : कुप्रथा के खिलाफ सामूहिक भागीदारी पर जोर

बाल विवाह मुक्त छत्तीसगढ़ अभियान के तहत शुक्रवार को जिला पंचायत राजनांदगांव के सभाकक्ष में एक महत्वपूर्ण जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में बाल विवाह रोकने के लिए विधिक प्रावधानों, प्रशासनिक रणनीतियों और समाज के हर वर्ग की सहभागिता पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम के दौरान सभी प्रतिभागियों को बाल विवाह की रोकथाम के लिए सामूहिक रूप से शपथ भी दिलाई गई जनको देखें जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव श्रीमती प्रीति नागवंशी ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बाल विवाह शून्यीकरण की विधिक प्रक्रिया और बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कानून के मुताबिक 21 वर्ष से कम आयु के पुरुष और 18 वर्ष से कम आयु की महिला का विवाह बाल विवाह की श्रेणी में आता है। कम उम्र में विवाह होने से विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा बाधित होती है और उनके शारीरिक, मानसिक व सामाजिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह बच्चों के मूल अधिकारों का सीधा उल्लंघन है।

यूनिसेफ (महिला एवं बाल विकास विभाग, रायपुर) के कंसल्टेंट शशांक शर्मा ने प्रशिक्षण देते हुए कहा कि बाल विवाह की रोकथाम केवल किसी एक विभाग की जिम्मेदारी नहीं है। इसके लिए प्रशासन, पुलिस, शिक्षा विभाग, पंचायत प्रतिनिधियों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, मितानिरों, सामाजिक संगठनों और पूरे समुदाय को मिलकर प्रयास करने होंगे। उन्होंने ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायतों की भूमिका रेखांकित करते हुए कहा कि ग्राम सभाओं में इस विषय पर चर्चा होनी चाहिए और विवाहों की निगरानी व जानकारी जुटाने में सहयोग करना आवश्यक है। जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी श्रीमती दीपा शाह ने जिले को पूरी तरह बाल विवाह मुक्त बनाने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार पर जोर दिया। उन्होंने सभी पंचायतों में विवाह पंजी अनिवार्य रूप से संधारित करने और प्रत्येक ग्राम सभा में बाल विवाह के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए प्रेरित किया।

जागरूकता अभियान : ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्रों और सामुदायिक बैठकों के माध्यम से लोगों को इसके कानूनी और सामाजिक दुष्परिणामों से अवगत कराना। चाइल्ड हेल्पलाइन का उपयोग : नागरिकों से अपील की गई कि वे अपने आसपास होने वाले किसी भी संभावित बाल विवाह की जानकारी न छिपाएं। ऐसी सूचना तुरंत प्रशासनिक अधिकारियों, पुलिस विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग या चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 पर दें।

पुरानी रंजिश में खूनी खेल: धारदार हथियार से युवक की हत्या, पुलिस ने 10 आरोपियों को किया गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग



थाना सिटी कोतवाली क्षेत्र के राजीव नगर में पुरानी रंजिश के चलते एक युवक की पीट-पीटकर और धारदार हथियार से हमला कर हत्या कर दी गई। मामले में दुर्ग पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 10 आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जिसमें 2 नाबालिग भी शामिल हैं।

क्या है पूरा मामला - प्रार्थी समारू राम देवांगन निवासी राजीव नगर ने दिनांक 09 नवंबर की रात्रि थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। उसने बताया कि मृतक चंदू उर्फ चंदन प्रसाद देवांगन का आरोपियों के साथ पुरानी रंजिश को लेकर वाद-विवाद हुआ था। विवाद बढ़ने पर आरोपियों ने अपने साथियों को बुला लिया और एक राय होकर चंदू पर जानलेवा हमला कर दिया। हमले में गंभीर रूप से घायल चंदू को तत्काल अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

थाना प्रभारी की मुस्तैदी से 24 घंटे में गिरफ्तारी - घटना की गंभीरता को देखते हुए निरीक्षक नवीन राजपूत के नेतृत्व में टीम गठित की गई। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी नामजद आरोपियों को घेराबंदी कर पकड़ लिया।

गिरफ्तार आरोपी में पंकज ठाकुर पिता केदार ठाकुर उम्र 28 वर्ष, निखिल ठाकुर पिता संदीप ठाकुर उम्र 20 वर्ष, खूबलाल ठाकुर उर्फ छोटी पिता केदार ठाकुर उम्र 22 वर्ष, संगीता ठाकुर पति संदीप ठाकुर उम्र 35 वर्ष, पुष्पा ठाकुर पति लल्ला ठाकुर उम्र 30 वर्ष, योगिता ठाकुर पिता संदीप ठाकुर उम्र 18 वर्ष, संदीप ठाकुर पिता मालिक राम ठाकुर उम्र 42 वर्ष और सत्या साहू पिता स्वर साहू उम्र 18 वर्ष सभी साकिन वार्ड नंबर 4 राजीव नगर, दुर्ग शामिल हैं। दो विधि से संघर्षरत बालक भी शामिल हैं।

कानूनी कार्रवाई - थाना सिटी कोतवाली दुर्ग में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 103(1), 61(2), 191(1), 191(2), 331(8) के तहत अपराध पंजीबद्ध कर सभी आरोपियों के विरुद्ध अग्रिम वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

शांतिनगर में पत्नी की हत्या करने वाला पति चंद घंटों में गिरफ्तार, चाकू और तवा बरामद



राजनांदगांव। चौकी विखली और साइबर सेल पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में पत्नी की बेरहमी से हत्या करने वाले आरोपी पति को चंद घंटों में डोंगरगढ़ से गिरफ्तार कर लिया गया। मामला 7 नवंबर की रात का है। शांतिनगर में हत्या की सूचना पर चौकी विखली पुलिस मौके पर पहुंची। प्रार्थी निखिल शेण्डे ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि उसकी बहन पति लक्की ठाकुर से विवाद के बाद ससुराल डोंगरगढ़ से मायके आई थी। आरोपी कपड़ा देने के बहाने विखली पहुंचा और घर में अकेली देखकर पत्नी पर तवा और धारदार चाकू से हमला कर हत्या कर दी और फरार हो गया।

पुलिस अधीक्षक अंकिता शर्मा के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कीर्तन राठौर के मार्गदर्शन और सीएसपी सत्यप्रकाश तिवारी के पर्यवेक्षण में टीम गठित की गई। पूछताछ में आरोपी लक्की ठाकुर उर्फ विक्की (20) पिता खिड़ीराम ठाकुर, निवासी बुधवारी पारा डोंगरगढ़ ने बताया कि एक साल पहले डोंगरगढ़ बड़े मंदिर में दोनों की पहचान हुई थी और प्रेम विवाह किया था। मृतिका मोबाइल पर ज्यादा बात करती थी, इसी शक को लेकर विवाद होता रहता था। इसी कारण पत्नी मायके आ गई थी। कपड़े देने के बहाने आकर उसने गला दबाया और चेहरे, गले व सीने पर तवा और चाकू से कई वार कर हत्या कर दी। हत्या के बाद हथियार फेंककर ट्रेन से डोंगरगढ़ भाग गया था।

पुलिस ने आरोपी के मेमोरेंडम पर हत्या में प्रयुक्त चाकू और लोहे का तवा जब्त कर लिया है। आरोपी के खिलाफ धारा 103(1) बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध कर 8 नवंबर को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया। इस कार्रवाई में चौकी प्रभारी उप निरीक्षक कैलाश चंद्र मरई, सउनि विनोद वर्मा, शत्रुहन टंडर सहित चौकी व साइबर सेल के जवानों की सराहनीय भूमिका रही।

सुपेला चौक में बस स्टैंड और ऑटो स्टॉप की मांग जनहित संघर्ष समिति ने SSP को सौंपा ज्ञापन





नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

शहर के सबसे व्यस्त सुपेला चौक में व्यवस्थित बस स्टैंड और ऑटो स्टॉप बनाने की मांग को लेकर आज जनहित संघर्ष समिति के प्रतिनिधिमंडल ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल को ज्ञापन सौंपा।

समिति के संरक्षक कन्हैया सोनी के नेतृत्व में पहुंचे प्रतिनिधिमंडल ने एसएसपी को अवगत कराया कि सुपेला चौक भिलाई का सबसे व्यस्ततम चौक है, जहां से प्रतिदिन हजारों यात्री रायपुर की ओर सफर करते हैं। रायपुर जाने के लिए कोई निर्धारित बस स्टॉप नहीं होने के कारण यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

संयोजक शारदा गुप्ता ने बताया कि निर्धारित स्टॉप नहीं होने से बसें और ऑटो बेतरतीब तरीके से सड़क पर खड़े हो जाते हैं, जिससे आए दिन जाम की स्थिति बनती है और दुर्घटना का खतरा बना रहता है। यदि व्यवस्थित बस स्टैंड और ऑटो स्टॉप बना दिया जाए तो न केवल यात्रियों को सुविधा मिलेगी, बल्कि यातायात व्यवस्था भी सुधरेगी।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल ने ज्ञापन पर तत्काल संज्ञान लेते हुए सुबह स्थल का मुआयना कराकर आगे की कार्य योजना तैयार करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर कन्हैया सोनी, शारदा गुप्ता, निशु पांडे, सुभाष शर्मा, सुनील मौर्य, विनोद उपाध्याय सहित समिति के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

विश्व मानवाधिकार परिषद ने चरोदा बस्ती में गरीब बच्चों के साथ मनाई दीपावली पर्व

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई-चरोदा



दीपावली के पावन पर्व पर विश्व मानवाधिकार परिषद छत्तीसगढ़ द्वारा एक बेहद खूबसूरत और आत्मीय पहल की गई। परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष (लीगल सेल) व राष्ट्रीय प्रभारी एडवोकेट पायल पुपटानी के मार्गदर्शन से प्रेरित होकर टीम ने मिलकर जरूरतमंद और गरीब बच्चों के बीच त्योहार की खुशियाँ बांटीं।

इस विशेष अभियान के तहत टीम के सदस्यों ने दादर के चरोदा बस्ती में जाकर बच्चों के बीच मिठाई, पटाखे और दीपक का वितरण किया। उपहार पाकर बच्चों के चेहरों पर बिखरी मासूम मुस्कान और उनकी आँखों की खुशी ने इस दीपावली को सच में सार्थक और समृद्ध बना दिया। इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारियों ने कहा कि दिए जलाकर तो हम हर साल अपना घर रोशन करते हैं, लेकिन किसी के जीवन में खुशियों का प्रकाश फैलाना ही त्योहार का असली महत्व और संदेश है। इस पुनीत कार्य को सफल बनाने में विश्व मानवाधिकार परिषद के सभी प्रमुख पदाधिकारी शामिल हुए, जिनमें स्टेट प्रेसिडेंट कुलवंत सिंह, सुशील झा, नवल किशोर, के. अरुणा और गोपाल सरकार उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर बच्चों के साथ समय बिताया और समाज में सेवा का एक अनूठा संदेश दिया।

दीपावली पर राजनांदगांव पुलिस ने बाल आश्रय और वृद्धाश्रम में बांटी खुशियां





नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

दीपावली के पावन पर्व पर राजनांदगांव पुलिस ने मानवता और संवेदनशीलता की मिसाल पेश करते हुए बाल आश्रय और वृद्धाश्रम पहुंचकर बच्चों और बुजुर्गों के साथ खुशियों के पल साझा किए।

पुलिस अधीक्षक सुश्री अंकिता शर्मा के निर्देश पर पुलिस अधिकारियों की टीम ने बाल आश्रय और वृद्धाश्रम पहुंचकर वहां निवासरत बच्चों एवं बुजुर्गों से आत्मीय मुलाकात की और उनका कुशलक्षेम जाना। अधिकारियों ने उनके साथ समय बिताकर पर्व की खुशियां साझा कीं और अपनत्व, स्नेह एवं संवेदनशीलता का संदेश दिया। पुलिस का कहना है कि दीपावली केवल दीप जलाने का पर्व नहीं, बल्कि खुशियां बांटने और समाज में प्रेम व मानवीय संवेदनाओं को मजबूत करने का अवसर है। इसी भावना के साथ यह पहल की गई।

इस अवसर पर सीएसपी आदित्य कुमार आईपीएस, डीएसपी सत्यप्रकाश तिवारी, डीएसपी केके वाजपेयी, आरआई लोकेश कुमार, इंस्पेक्टर उपेंद्र शाह, इंस्पेक्टर कैलाश मरई सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

नेशनल वर्क स्किल्स में बीएसपी का डंका : 7 कर्मचारियों ने जीते 7 पुरस्कार

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई



सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के कर्मचारियों ने एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी तकनीकी दक्षता का लोहा मनवाया है। कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 36वीं नेशनल वर्क स्किल्स कॉम्पिटिशन में बीएसपी के 7 कर्मचारियों ने 3 प्रथम, 3 द्वितीय और 1 तृतीय सहित कुल सात पुरस्कार जीतकर संयंत्र को गौरवान्वित किया है।

डीआईसी ने किया सम्मानित

इस उपलब्धि पर डीआईसी कॉन्फ्रेंस हॉल में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। भिलाई इस्पात संयंत्र के निदेशक प्रभारी चित्त रंजन महापात्र ने सभी विजेताओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया। इस दौरान सभी कार्यपालक निदेशक मौजूद रहे। निदेशक प्रभारी ने कहा कि यह सफलता कर्मचारियों की तकनीकी दक्षता, कठिन परिश्रम और सीखने की ललक का परिणाम है, जो अन्य कार्मिकों को भी प्रेरित करेगी।

किसने जीते पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार - कारपेंट्री: राम साजन (एमआरडी विभाग), इलेक्ट्रीशियन: अखिल कुमार राठौर (ब्लास्ट फर्नेस विभाग) और फिटर: राजेश कुमार नायक (पीएनबीएस) है।

द्वितीय पुरस्कार -फिटर: प्रभुचरण जेना (कोक ओवन विभाग), पीएलसी: बी. वेंकट अप्पाराव (ए एंड डी विभाग) और टर्नर: माझा हांसदा (बार एंड रॉड मिल) है।

तृतीय पुरस्कार - पीएलसी: कुंद्रापु गणेश (ए एंड डी विभाग) है।

एचआरडी की रही अहम भूमिका

इस सफलता में मानव संसाधन विकास विभाग के लर्निंग एंड डेवलपमेंट विभाग की अहम भूमिका रही। विभाग ने प्रतिभागियों के लिए विशेष प्रशिक्षण, अभ्यास सत्र और तकनीकी कौशल विकास कार्यक्रम चलाए थे। बीएसपी वर्ष 2008 से लगातार इस प्रतियोगिता में भाग ले रहा है, जो कर्मचारियों को राष्ट्रीय स्तर पर अपना कौशल दिखाने का मंच देती है।

नाबालिग से दुष्कर्म मामले में केस दर्ज, 3 आरोपी पुलिस हिरासत में

दुर्ग-भिलाई। दुर्ग जिले के जेवरा-सिरसा चौकी क्षेत्र में 13 साल की नाबालिग बच्ची से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। आरोप है कि गांव में गोवर्धन पूजा के बाद चल रहे सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान तीन युवक बच्ची को अपने साथ ले गए। इनमें से एक युवक ने बच्ची के साथ दुष्कर्म किया। मामले में पुलिस ने तीनों युवकों को हिरासत में लिया है। पुलिस के मुताबिक यह गैंगरेप का मामला नहीं है। फिलहाल एक ही युवक पर दुष्कर्म का आरोप है। उसके साथ गए दोनों युवकों को भी अपहरण और अन्य धाराओं में आरोपी बनाया जाएगा। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू की। इसके अलावा एक अन्य युवक को भी पकड़ा गया है। तीसरे युवक की तलाश जारी है।







"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100